भूदान-यज्ञ

भूदान-यज्ञ मूलक ग्रामोद्योग प्रधान अहिंसक क्रान्ति का सन्देशवाहक—साप्ताहिक

सर्व सेवा संघ का मुख पत्र

वर्ष : १५ अंक : १६

सोमवार २० जनवरी, '६६

अन्य पृष्ठों पर

बाबा की बातें, त्रिवेणी संगम, लोकयात्रा से १८६

हमारा सच्चा अभियान —सम्पादकीय १८७

पश्चिम की उथल-पुथल —विमला ठकार १८८

तीन बुनियादी ताकतें··· —विनोबा १८९

गया जिलादान की कथा —निर्मलचन्द्र १९०

जिलादान के बाद बलिया में··· १९१

प्रदेशदान का लक्ष्य और अस्थिर राजनीतिक संदर्भ —जयप्रकाश नारायण १९२

जनमत के जमाने में —डा० दयानिधि पटनायक १९५

बिहार में मतदाता-शिक्षण अभियान १९७

अन्य स्तम्भ

अखबार की कतरनें, पुस्तकें, प्रादेशिक पत्र

आवश्यक सूचना

'भूदान-यज्ञ' का अगला अंक विशेषांक के रूप में ३० जनवरी '६६ के अवसर पर प्रकाशित होगा। उसके बाद का ३ फरवरी का अंक बन्द रहेगा। विशेषांक की कीमत ५० पैसे होगी। सीमित प्रतियाँ ही छपने जा रही हैं। अधिक मँगाना हो तो तत्काल सूचना दें। —व्यवस्थापक, पत्रिका विभाग

सम्पादक
राममूर्ति

सर्व सेवा संघ प्रकाशन
राजघाट, वाराणसी-१, उत्तर प्रदेश
फोन : ४१८५

मैं तो गुण को ही सबसे अधिक महत्त्व देता हूँ !

हम जब अपने लिए स्वतंत्रतापूर्वक अपना मत प्रकट करने और कार्य करने के अधिकार का दावा करते हैं, तो यही अधिकार हमें दूसरों को भी देना चाहिए। बहुसंख्यक दल का शासन, जब वह लोगों के साथ जबरदस्ती करने लगता है तब, उतना ही असह्य हो उठता है जितना किसी अल्पसंख्यक नौकरशाही का। हमें अल्पसंख्यकों को धीरज के साथ समझा-बुझाकर और दलील करके ही अपने पक्ष में लाने की कोशिश करनी चाहिए। हमें किसीकी आज्ञा से और सजा के डर से ही काम करने की तालीम मिली है, इसलिए आज हम प्रतिदिन जो शक्ति प्राप्त कर रहे हैं, उसका भान हो जाने की वजह से संभव है कि हम अपने से कमजोर लोगों के साथ अपने सम्बन्धों में विदेशी शासकों की गलतियों को बहुत बढ़े-चढ़े रूप में दोहरायें। यह पहली स्थिति से ज्यादा बुरी स्थिति होगी।[१]

मैं तो गुण को ही सबसे अधिक महत्त्व देता हूँ—मैं संख्या का लगभग कोई खयाल नहीं करता। आज हमारे अन्दर सन्देह, भेदभाव, हित-विरोध, अन्धविश्वास, भय, अविश्वास आदि अनेक दोष विद्यमान हैं। ऐसी अवस्था में संख्याबल में न केवल सुरक्षितता का अभाव है, बल्कि खतरे का अन्देशा भी हो सकता है। संख्याबल उस समय एक दुर्दमनीय शक्ति हो सकता है, जब कि सब लोग एक आदमी की तरह पूर्ण अनुशासन के साथ काम करें। परन्तु जब कोई आदमी किधर खींचता हो और कोई किधर या कोई यह भी नहीं जानता हो कि किधर खींचना चाहिए, तब संख्याबल को एक विनाशक शक्ति ही समझिए।[२]

मैं किसी उम्मीदवार से इतना ही पूछूँगा : 'तुममें पुरुष या स्त्री के कितने गुण हैं ? क्या तुममें अवसर के अनुसार कार्य करने की योग्यता और क्षमता है ?' अगर वह उम्मीदवार—स्त्री या पुरुष—इन परीक्षाओं में उत्तीर्ण हो जाय, तो मैं पहले उसको चुनूँगा, जो छोटे-से-छोटे वर्ग का सदस्य होगा। इस तरह मैं ऐसे न्यायपूर्ण नियमों के अनुसार सारे अल्पमतों को तरजीह दूँगा, जो सारे हिन्दुस्तान का कल्याण साधनेवाले होंगे, न कि हिन्दुओं और मुसलमानों का या अन्य किसी विशेष समाज का।[३]

अहिंसा में मेरी दृढ़ श्रद्धा का अर्थ यह अवश्य होता है कि अल्पमतों के सामने झुका जाय, जब वे सचमुच कमजोर हों। सम्प्रदायवादियों को निर्बल बनाने का उत्तम मार्ग यह है कि हम उनके सामने झुक जायँ। हमारा विरोध केवल उनके सन्देह को बढ़ाने और बदले में उनके विरोध को मजबूत बनाने का ही काम करेगा।[४]

—मो० क० गांधी

(१) 'यंग इंडिया' : २६-१-'२२, पृष्ठ ५४ (२) हिन्दी 'नवजीवन', : ३०-४-'२५, पृष्ठ ३०२
(३) 'यंग इंडिया' : १३-८-'२५, पृष्ठ २७९ (४) 'यंग इंडिया' : २-७-'३१, पृष्ठ १६२

www.vinoba.in

बाबा की बातें

- सृष्टि और दृष्टि के बीच आता है पढ़ना। ग्रन्थ पढ़े जाते हैं, युगों-युगों तक, अखबारों की हस्ती एक दिन की भी नहीं होती, सुबह का शाम को बासी हो जाता है।
- ऊपर से नीचे तक जहाँ भ्रष्टाचार है, वहाँ वह शिष्टाचार हो गया, जो वैसा नहीं करता, वह विशिष्टाचार करता है।
- सभी 'वादों' से ऊपर एक वाद है 'वे वाद' (दे इज्म) यानी वे हमारे लिए कर देंगे (दे विल डू फार अस)! ऐसी स्थिति में जनशक्ति की सख्त जरूरत है।
- काशी में गंगा-स्नान के लिए बने घाटों पर शराब के विज्ञापन हैं, दूकानें हैं। तब यह भी संकेत होना चाहिए कि पवित्र स्नान के बाद उत्तम शराब पीनी चाहिए या पीकर स्नान करना चाहिए!
- एक जगह हमें मानपत्र दिया गया। हमने कहा, "मानपत्र देने की बात पुरानी हो गयी, हमें आप दानपत्र दीजिए, मानपत्र हम आपको देंगे।"
- यह भारत की संस्कृति है कि विद्वानों पर सत्ता का अंकुश नहीं हो सकता, बल्कि सत्ता पर अंकुश रहना चाहिए विद्वानों का।
- जो अधिकार वाल्मीकि, तुलसीदास, शंकराचार्य आदि को नहीं दिया गया, वह मामूली 'एजुकेशन डायरेक्टर' को आज दिया गया है। वह तय करता है कि क्या शिक्षा दी जाय, कैसे शिक्षा दी जाय। इधर तो दिमाग को गुलाम बनाने की यह योजना चल रही है, उधर लोकतंत्र, स्वतंत्र चिंतन, स्वतंत्र मत आदि की चर्चा होती है। सारा मामला सड़ गया है।

त्रिवेणी संगम

[संगम-तीर्थ प्रयाग में पिछले २१ दिसम्बर '६८ को हिन्दी के दो महान कवियों, पं० सुमित्रानन्दन पन्त और श्रीमती महादेवी वर्मा के साथ आचार्य विनोबा की मुलाकात हुई। ज्ञान और प्रतिभा के इन तीन स्रोतों का मिलन एक त्रिवेणी संगम ही तो था। प्रस्तुत है उस समय हुई चर्चाओं के कुछ अंश। —सं०]

सुमित्रानन्दन पन्त : अतीत की मूर्तियों का अतिक्रमण करके नयी सांस्कृतिक मूर्ति की स्थापना करना हम अपना लक्ष्य मानते हैं।

आपको देखना पूरे भारत को देखना है, आपका कोई आदेश?

विनोबा : हम कभी कवि को आदेश देते नहीं। वह कभी आदेश में आ नहीं सकता।

महादेवी वर्मा : छात्राध्यापकों के असन्तोष का हल कैसे निकले? हम क्या करें? हर जगह हिंसा प्रकट हो रही है। आग से आलोक भी होता है, घर भी जलता है। आज दूसरीवाली स्थिति दिखायी दे रही है।

विनोबा : बाबा को जो सूझता है, वह कर रहा है। ग्रामदान में गाँव की जमीन की मिल्कियत ग्रामसभा की होगी। इससे गाँव में ग्रामसभा की शक्ति बनेगी, और गाँव में शान्ति कायम होगी। यह काम नीचे से हो रहा है।

ऊपर से आचार्यों की पक्षरहित स्वतंत्र शक्ति खड़ी हो, इसके लिए 'आचार्य-कुल' का कार्यक्रम है। विद्वान, कवि, कलाकारों आदि को—

जाति, धर्म, पंथ, भाषा, पक्ष, प्रांत—आज के इन षड्रिपुओं से मुक्त रहना चाहिए।

लोकयात्रा से

करुणा की प्रेरणा : आस्था का आधार

एक दिन कालेज में कार्यक्रम था। मंच पर प्राचार्य तथा प्राध्यापकगण आधुनिक वेषभूषा में बैठे थे। सामने छात्र-छात्राएँ बड़े ध्यान से सुन रही थीं। वक्ता कमीज के ऊपर बनियाइन और घुटनों के ऊपर तक का कच्छा पहने थे। पाँव फट रहे थे, जिनमें खड़ाऊँ थी। वेषभूषा का भान न उन्हें था, न ही दूसरों को। उनके मन में न कोई ग्रन्थि (काम्पलेक्स) थी, न हीनभावना। विचार-प्रचार की धुन थी और था भरपूर आत्मविश्वास। वे दीवाने हैं एक पथ के, हर कष्ट सहने को तैयार। निर्मल दीदी कह रही थीं, "बाबा ने सबको निकाल-निकालकर कैसा निर्भय बना दिया है।" मैंने उन वक्ता महोदय से पूछ ही लिया, "बनियाइन तो कमीज के नीचे पहनते हैं न? आपने इसे ऊपर क्यों पहना है?" उनका जवाब था, "बहिनजी, यह बनियाइन स्वेटर का काम देती है। जब ठंढ कम होती है, तो अन्दर पहनता हूँ। जब ठंढ अधिक लगती है, तब ऊपर पहन लेता हूँ।"

ये भाई वर्षों तक शिक्षक रहे। उम्र होगी अब लगभग ४५ वर्ष। सब कुछ छोड़कर सर्वोदय-आन्दोलन में आ गये। अपनी जमीन का एक हिस्सा भूदान में, एक हिस्सा गाँव की सेवा में दे दिया और एक हिस्सा अपने गुजारे के लिए रखा। आयु और मौसम की उन्हें परवाह नहीं। आखिर इन लोगों को क्या मिलता है? ये लोग क्यों अभावों और कष्टों के बाद भी इसमें जुटे हैं? इनके अन्दर कौनसी ऐसी प्रेरणा काम कर रही है, जिससे वे अपने सुख के संसार को तिलांजलि देकर भटक रहे हैं? निश्चित ही देश की वर्तमान स्थिति उनके लिए असहनीय है। करुणा से प्रेरित होकर ये लोग जूझ रहे हैं समस्याओं से। भारत माता की पुकार और सन्त का आह्वान जनता में करुणा जाग्रत करेगा ही, इस आस्था के साथ।

—देवी रीरूवानी

हमारा सच्चा अभियान

सभा की भूमि झण्डों और पताकों से सजायी गयी थी। भव्य मंच बनाया गया था। सैकड़ों सिरों पर पार्टी की रंगीन टोपियाँ चमक रही थीं। ठण्ढक में भी हजारों की संख्या में जनता नेता की प्रतीक्षा में बैठी हुई थी। घोषित समय से लगभग एक घण्टा बाद अचानक शोर हुआ : 'आ गये।' एक दर्जन मोटर-साइकिलों पर स्वयंसेवक आगे-आगे चल रहे थे। पीछे फूल-मालाओं से लदी हुई, सजी हुई, मोटर थी जिसमें नेता स्वयं विराजमान थे।

जय-जयकार हुआ। नेता स्वयं खड़े हुए, सभा के सामने झुककर प्रणाम किया, बैठ गये। दल के युवक मन्त्री शुरू के दो शब्द कहने उठे। बोले : 'आज हमारे बीच एक महान नेता, एक युग-पुरुष, आया है। उनसे मार्गदर्शन लेकर हमें आगे बढ़ना है। हम अजेय हैं।'

नेता लाऊडस्पीकर के करीब आये। दो घंटे तक धारा-प्रवाह भाषण हुआ। लच्छेदार भाषा, विनोद की फुलझड़ी, आलोचना की चोट, देशभक्ति की ललकार, विरोधियों की फटकार—कुल मिलाकर भाषण मजेदार था। बीच-बीच में तालियाँ बजाकर, और ठहाके लगाकर, जनता ने बताया कि मजेदार भाषण में उसे भी मजा आया।

सभा समाप्त हुई। जाड़े की शाम थी। लोग कदम बढ़ाकर बाहर निकले। मैंने भी भीड़ में रास्ता बनाने की कोशिश की। हर एक की जबान पर एक ही चर्चा थी—भाषण। एक ने कहा : 'इसी तरह की बातें उस दिन वह नेता भी कह रहे थे।' दूसरा बोला : 'हर पार्टी-वाला यही कहता है कि दूसरी पार्टी बुरी है। कोई अपनी बात तो बताता नहीं। हम लोग बारी-बारी सबकी बुराई सुनते हैं। जब सब बुरे ही हैं तो वोट किसे दें ?'

किसीने कहा : 'सब निकम्मे हैं, किसीको वोट मत दो।' दूसरे ने कहा : 'जो सबसे कम बुरा हो उसे दो।' तीसरा बोला : 'दल की ओर देखो ही मत, जो आदमी सबसे अच्छा हो उसे वोट दो।'

चर्चा चलती जा रही थी, कदम बढ़ते जा रहे थे। सड़क पर पहुँचते-पहुँचते किसीने कहा कि पाँच दिन बाद एक दूसरे दल के बड़े नेता आनेवाले हैं।

इस बार उ० प्र० और बिहार की जनता का पेट भाषणों से भर जायगा। दूसरी जगहों से निश्चिन्त होकर सब दलों के नेता फुर्सत के साथ चण्डीगढ़ से कलकत्ता के बीच में घूम रहे हैं।

कहा जाता है कि लोकतंत्र की सबसे बड़ी खूबी यही है कि उसने बन्दूक की जगह विचार को बिठाया है। तरह-तरह के विचार मतदाता के सामने आते हैं, और उसे अपनी मर्जी का विचार पसन्द करने की पूरी छूट रहती है। विचार दल का, और वोट वोटर का, इन दो के मेल से लोकतंत्र की गाड़ी चलती है।

फरवरी में मध्यावधि चुनाव है। हम अपने को जरा वोटर की जगह में रखें, और सोचें कि इस बार उसके सामने क्या-क्या विकल्प हैं। एक पार्टी को छोड़कर दूसरी पार्टी को वोट देने का विकल्प तभी सार्थक है जब इस विकल्प से समस्याओं को कोई नया हल सामने आये। अगर ऐसा नहीं होता तो विकल्प नागनाथ की जगह साँपनाथ के सिवाय दूसरा क्या होगा ?

पिछले सौ वर्षों में हमारे देश की राजनीति का कुछ अजीब ढंग से विकास हुआ है। गांधीजी के पहले कांग्रेस में 'प्रार्थना' (पेटीशन और प्रेयर) की राजनीति थी। कांग्रेस से अलग एक धारा प्रत्यक्ष कार्रवाई (डाइरेक्ट ऐक्शन) की थी, जो आतंकवादियों की थी। गांधीजी के नेतृत्व में प्रार्थना का स्थान प्रतिकार ने लिया, और प्रत्यक्ष कार्रवाई में छिपे बम की जगह खुला आन्दोलन आया। सन् १९२० से १९४२ तक यही दौर चलता रहा।

सन् १९४६ में देश की सत्ता कांग्रेस के हाथ में आयी। सन् १९६६ तक उसका एकछत्र राज्य रहा। कांग्रेस ने मान लिया था कि देश के लिए कांग्रेसवाद के सिवाय दूसरा रास्ता ही नहीं है। उसकी प्रतिक्रिया में 'गैर-कांग्रेसवाद' प्रकट हुआ। लेकिन कुछ महीनों में ही जाहिर हो गया कि गैर-कांग्रेसवाद वस्तुतः विरोधी दलों के लिए अवसरवाद के सिवाय दूसरा कुछ नहीं था। इस अवसर का लाभ उठाकर हर दल ने अपनी-अपनी शक्ति संगठित करने की कोशिश की। हर एक ने अपने लिए संघर्ष का एक मंच तैयार किया। सम्प्रदाय का संघर्ष, जाति का संघर्ष, वर्ग का संघर्ष, वर्ण का संघर्ष, क्षेत्र का संघर्ष, भाषा का संघर्ष, और इन सबको बढ़ावा देनेवाला दलगत संघर्ष। बस हमारी सारी राजनीति, चाहे वह दक्षिणपंथी हो, या बामपंथी, इसी संघर्षवाद में सिमट गयी। संघर्षवाद इतना आगे बढ़ गया कि हर राजनैतिक दल ने अपनी अलग-अलग 'सेना' संगठित कर ली। विद्यालयों तक में दलों के वैतनिक विद्यार्थी-एजेण्ट रखे गये। आज हालत यह है कि जो बाहर से खुला वोट और निर्दोष लोकतंत्र दिखायी दे रहा है, उसके पीछे उपद्रव और हिंसा की शक्तियाँ योजनापूर्वक संगठित की जा रही हैं। राजनीति जनता की बुनियादी समस्याओं का कोई हल नहीं दे रही है। उसके पास हल है भी नहीं। राजनीति—विरोधवाद की राजनीति—देश की चेतना को नहीं जगा सकती, उसकी रचनात्मक शक्ति को संगठित नहीं कर सकती। नेता तो यहाँ तक कहने लगे हैं कि सरकार तो एक साधन है दल की शक्ति बढ़ाने का, ताकि दूसरे दल परास्त किये जा सकें। जनता भी मानने लगी है कि यह चुनाव आदि सब सत्ता का मोहक खेल है, इससे अधिक कुछ नहीं। वह समझती जा रही है कि नेताशाही और नौकरशाही की जबरदस्त दीवारों को चीरकर उसकी आवाज सरकार में नहीं घुस सकती। देश की समस्याओं को हल करने के लिए जिस शक्ति, प्रतिभा और पद्धति की जरूरत है वह राजनीति के पास नहीं है।

इस स्थिति में एक विकल्प यह है कि एक दल को छोड़कर दूसरे दल को वोट दिया जाय। दूसरा विकल्प है कि दल का ध्यान

पश्चिम की उथल-पुथल : नये पथ की तलाश

www.vinoba.in

"पश्चिम और पूर्व यूरोप के विचारकों, चिंतकों और नयी पीढ़ी (१६ से २४ साल की उम्रवालों में अधिकतम) में वहाँ की वर्तमान जीवन-पद्धति, विज्ञान और उसकी तकनीक के बारे में व्यापक असंतोष और गहरा विद्रोह-भाव पैदा हो गया है। यद्यपि पूर्व और पश्चिम यूरोप के विद्रोहों के कारणों में भिन्नता है, लेकिन कुल मिलाकर सारे यूरोप की काया में गम्भीर बीमारी के लक्षण प्रकट हो रहे हैं। जिन राजनीतिक सिद्धान्तों के बारे में कुछ सालों पहले कोई विवाद नहीं थे, वहाँ अब निश्चित सवाल उठ खड़े हुए हैं। उदाहरण के लिए 'नेशन स्टेट' का सिद्धान्त। प्रश्न उठ गया है कि क्या भूखण्डों को राष्ट्रों में विभाजित करना वैज्ञानिक बात है? क्या पिछले दो महायुद्धों की बुनियाद यह सिद्धान्त ही नहीं है?" एक लम्बे विदेश-प्रवास के बाद भारत लौटने पर सर्वोदय-परिवार की सुपरिचित विदुषी बहन विमला ठकार ने वाराणसी में अपने अनुभव सुनाते हुए उक्त बातें कहीं।

अपनी बातों का सिलसिला जारी रखते हुए विमलाबहन ने आगे कहा, "साम्राज्यवाद की १७ वीं शताब्दी से चली आ रही अर्थनीति, राजनीति और पूरी समाज-नीति पर नया चिंतन गैर-सरकारी क्षेत्रों में शुरू हो गया है। आज की जो रचना है उसे जड़-मूल से उखाड़ फेंकने की आकांक्षा पैदा हो गयी है। उत्पादक और उपभोक्ता के बीच की जितनी भी इकाइयाँ विकसित हुई हैं, उन्हें वे खत्म कर देना चाहते हैं। वे इस विषय पर गम्भीरता से विचार कर रहे हैं कि विज्ञान के सहकार से किस प्रकार की उत्पादन और उपभोग की पद्धति विकसित की जाय, जिसमें केन्द्रीकरण और उद्योगीकरण का वह रूप न रह जाय, जिसमें मनुष्य ही खो जाता है। मानव-स्वाधीनता की क्रान्ति हम इसे कह सकते हैं।"

इस नयी क्रान्ति के तरीकों की चर्चा करते हुए विमलाबहन ने कहा, "तरीके उनके पुरातन हैं। यद्यपि प्रतिपक्षी को मारने की भावना उनमें नहीं है, लेकिन विश्व-विद्यालयों, थियेटरों आदि सार्वजनिक स्थानों पर कब्जा करने की उनकी चेष्टा रहती है। शुरू में तो इन सारे प्रयासों में हिंसा नहीं थी, लेकिन पुलिस के दुर्व्यहार ने छात्रों में हिंसात्मक उभाड़ ला दिया और उन्होंने पुलिस के प्रतिरोध के लिए कई तरीके विकसित कर लिये।"

असंतोष और विद्रोह के इन उभाड़ों के विधायक पक्ष पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करती हुई विमलाबहन ने कहा, "धर्म, पुराण, शास्त्र, सबके प्रति भयंकर असंतोष तो है ही, अपने से पहलेवाली पीढ़ी को वे दम्भी, पाखण्डी पीढ़ी मानते हैं और उनके दुहरे व्यक्तित्व के पर्दे को फाड़ देना चाहते हैं। विधायक क्रान्ति का कोई मार्ग अभी तक उन्हें सूझा नहीं है, लेकिन मानवीय स्वाधीनता में बाधक हर चीज उन्हें अमान्य है। आदर्शवाद और जीवन-पद्धति का नाम भी वे नहीं लेना चाहते, लेकिन निषेध कोई स्थायी भाव नहीं है। स्वतंत्र रीति से उनकी खोज जारी है।"

बिहारदान की अद्यतन स्थिति (१० जनवरी '६६ तक)

		क्षेत्र की कुल जनसंख्या	ग्रामीण जनसंख्या, जिनका ७५% ग्रामदान में शामिल हुआ
कमिश्नरी दान : तिरहुत (दरभंगा, मुजफ्फरपुर, सारण, चम्पारण)		१,५१,२२,५५४	१,४४,४७,६१३
जिलादान (अन्य) : सहरसा		१७,२३,५६६	१६,५६,३११
पूर्णिया		३०,८९,१२८	२६,०३,५३१
गया		३६,४७,८१२	३३,८२,७९४
प्रखण्डदान : मुंगेर	३१	२६,६१,६२९	२६,५५,६६५
भागलपुर	४	३,५०,५९२	६,१५,८३२
सं० परगना	३	१,५०,७८६	१,५०,७८६
पलामू	१४	६,४१,३४२	६,१५,८३२
सिंहभूमि	५	२,४३,८७८	२,४३,७७८
शाहाबाद	५	३,५५,०१३	२,९४,१६७
धनबाद	६	५,५३,७५१	३,७५,७७३

बिहार की—कुल आबादी का ६५% ग्रामदान में शरीक

कुल ग्रामीण आबादी का ६३% ,,

जिलादानी जिलों का अनुपात ५३%

अनुमंडल का अनुपात ४३%

प्रखण्डदान अनुपात ६०%

छोड़कर 'सबसे अच्छे' उम्मीदवार को वोट दिया जाय चाहे वह किसी दल या जाति का हो। तीसरा विकल्प है कि स्वयं दलगत राजनीति का विकल्प ढूँढ़ा जाय।

इस समय देश में दो धाराएँ हैं जो इस राजनीति का विकल्प तलाश कर रही हैं। वे दल की राजनीति में नहीं, जनता के 'डाइरेक्ट ऐक्शन' में विश्वास करती हैं। एक धारा है नक्सालबाड़ी की, दूसरी है ग्रामदान की। एक हिंसा के षड्यंत्र में विश्वास करती है, दूसरी शांति की क्रान्ति में।

जहाँ तक इस मध्यावधि चुनाव का सम्बन्ध है, यह स्पष्ट है कि देश की राजनीति में दल अपना महत्त्व खो चुके हैं, इसलिए 'अच्छे उम्मीदवार' को वोट देना अच्छा है, ताकि कुछ अच्छी संयुक्त सरकारें बन सकें। लेकिन अच्छी सरकार हमारी स्थायी योजना नहीं हो सकती। हमें जरूरत है समाज-परिवर्तन की, मात्र सरकार-परिवर्तन की नहीं। हमें ऐसी सरकार चाहिए जिस पर क्रान्ति का रंग चढ़ा हुआ हो, जो क्रान्ति की पूरक शक्ति बन सके। वह सरकार कैसे बनेगी? बनेगी तब जब ग्रामदानी गाँवों के प्रतिनिधि सरकार में जायेंगे, राजनैतिक दलों के नहीं। इस चुनाव के बाद, और राज्यदान के तुरंत बाद, हमारा 'दलमुक्त ग्राम-प्रतिनिधित्व' का अभियान शुरू हो जाना चाहिए। जब राजनीति लगेगी सरकार बदलने में, तब हमें लग जाना चाहिए समाज बदलने में।

तीन बुनियादी ताकतें

www.vinoba.in

भगवान की, शिक्षकों की, जनता की

हमारी आप लोगों (शिक्षकों) पर बहुत श्रद्धा है। नं० १ में हमारी श्रद्धा भगवान् पर है। नं० २ में आप पर है, यानी शिक्षकों पर। और नं० ३ में जनता पर है। ये तीनों ताकतें हैं। इनके अलावा समाज में व्यापारी, राजनैतिक लोग और सेना, इनको भी ताकतें हैं। लेकिन ये तीनों ताकतें मेरी निगाह में दुनिया का भला करनेवाली नहीं हैं। वे ताकतें तो हैं। शैतान की भी अपनी ताकत होती है। वह हर एक के दिल पर हावी होता है। काम, क्रोध, मद, मोह, मत्सर, लोभ, ये शैतान की ताकतें हैं। लेकिन वे कल्याणकारी नहीं हैं।

सेना, राजनैतिक मुत्सद्दी और अमीरों की ताकत, ये तीनों दुनिया में खूब चलती हैं। लेकिन उनसे भला होनेवाला नहीं है। महान पुरुष पैदा हुए तो वे गरीबी में पैदा हुए। अगर राज-गृह में पैदा हुए तो उन्होंने उसका त्याग किया, अमीरी का त्याग किया। भगवान गौतम बुद्ध राजकुल में पैदा हुए, लेकिन उन्होंने राज का त्याग किया, तब वे महान हुए। अनेक राजा आये और गये, उनको कोई याद नहीं करता, लेकिन गौतम बुद्ध को आज तक लोग याद करते हैं। क्योंकि उन्होंने सत्ता फेंक दी। मुहम्मद पैगम्बर की बात है। वे जिस दिन मर गये, उस दिन घर में दीपक जलाने के लिए तेल नहीं था। वे बादशाह थे। लेकिन अपने हाथ से काम करते थे और जो मिलता था, उसीमें गुजारा करते थे। खलीफा उमर की कहानी है। मुहम्मद के हाथ में जब राज आया, तब उमर को उन्होंने सरदार बनाया। लोगों ने मुहम्मद के पास शिकायत की कि खलीफा उमर जब से सरदार बना है, महीन आटा खाता है। मुहम्मद ने खलीफा से पूछा, 'क्या तू महीन आटा खाता है?' खलीफा ने कहा, 'जी हाँ।' तब मुहम्मद ने उसे डाँटा। कहा, 'अरे तू क्या बन गया? तू ने अपने को क्या समझा? महीन आटा नहीं खाना चाहिए। गरीब बना रहना, यह एक ताकत है।' इसलिए जो अमीरी में पैदा हुए, उन्होंने अमीरी का त्याग कर दिया, गरीबी में रहना पसन्द किया। 'कर गुजरान गरीबी में।' तो सेना की, अमीरों की और राजनैतिक लोगों की ताकत से दुनिया तंग आ जाती है।

आप पर हमारी जो श्रद्धा है, उसका क्या कारण है? कारण यह है कि आपकी जो शक्ति है, वह ज्ञान की शक्ति है। ज्ञान देने के लिए आप डण्डा लेकर नहीं जायेंगे। गाँव-गाँव में जायेंगे तो प्रेम से समझायेंगे, तभी वे लोग हस्ताक्षर करेंगे। बुझाना, रिझाना, समझाना, यह शिक्षकों की शक्ति है। कल्याणकारी शक्ति है। जनता की शक्ति यानी 'ब्रेड लेबर'—मेहनत करने की शक्ति। जब भारत पर पाकिस्तान का हमला हुआ, तब शास्त्रीजी ने नारा दिया था "जय जवान, जय किसान।" किसान का काम चलता रहेगा तो जवान को ताकत मिलेगी। किसान यानी आम जनता, जो परिश्रम करती है। इसीलिए

विनोबा

उनके हृदय में सद्भावना भरी रहती है। वह अपना पसीना बहाती है तब फसल पैदा होती है। शरीर-परिश्रम से उनके पाप भस्म हो जाते हैं। भगवान् पर उनका भरोसा होता हैं। भगवान् ने सबके हृदय में करुणा रखी है। एक दफा एक पक्षी का छोटा-सा बच्चा नीचे गिर गया, वह छटपटाता था। कुछ लोगों ने वह देखा। उनसे उसकी छटपटाहट देखी नहीं गयी। उसे ठंड लग रही थी। तो उस बच्चे को उठाकर वे जरा अन्दर ले गये और उसे कुछ गर्मी पहुँचायी, तो वह खुश हो गया और आनन्द से उड़ गया। मनुष्य के हृदय में रहम है, वह किसीका दुःख देख नहीं सकता। कुत्ते का या बिल्ली का दुःख भी वह देख नहीं सकता।

दस-पन्द्रह दिन पहले हमने स्टेशन पर देखा कि प्लेटफार्म पर मनुष्य के पास कुत्ता सोया था। मनुष्य भी सोया था और उसके पास कुत्ता भी। फर्स्ट क्लास के रूम में कोई किसीको पूछेगा नहीं, लेकिन थर्ड क्लास का पैसेंजर कुत्ते को भी पूछता है। अब उस मनुष्य के घर का तो वह कुत्ता नहीं था, लेकिन यह दया है, रहम है, करुणा है। यह भगवान् की मनुष्य को दी हुई परम देन है। वह हमारा पिता है। उस पर हमारा विश्वास और श्रद्धा है। और नं० २ में आप पर श्रद्धा है। क्यों? क्योंकि आपकी ताकत है ज्ञान, समझाने की ताकत। एक दफा आद्य शंकराचार्य से पूछा गया कि आप किसे काम करेंगे? उन्होंने जबाब दिया शिक्षण-शस्त्र से। उनसे फिर से पूछा गया, अगर लोग नहीं समझेंगे तो? उन्होंने कहा—नहीं समझेंगे तो मैं दुबारा समझाऊँगा। फिर भी अगर नहीं समझेंगे तो तिबारा समझाऊँगा, समझाता ही रहूँगा। यही मेरा एकमात्र शस्त्र है। दूसरा शस्त्र मेरे पास नहीं है। न मैं वह चाहता हूँ, न उस पर मेरी श्रद्धा है।" एक दफा बुद्धि को बात समझ में आ गयी तो फिर क्या मजाल है कि मनुष्य उसे टाले। एक दफा समझ में आ गया तो बस, काम हो गया। और जनता पर इसलिए श्रद्धा है कि वह शरीर-परिश्रम करती है।

तो दया, करुणावाले भगवान् पर हमारी श्रद्धा है। और ज्ञान-शस्त्र रखनेवाले आप पर हमारी श्रद्धा है। शरीर-परिश्रम करके खटनेवाली जनता पर हमारी श्रद्धा है।

आपने अभी कहा कि यह ग्रामदान का काम कठिन है। काम बहुत कठिन नहीं है, आसान है। आपको ब, बा, बि, बी की बाराखड़ी समझनी है। गाँववालों से यही कहना है कि बेकार, बूढ़े, बच्चे, बेवाएँ और बीमार, इनकी व्यवस्था गाँववाले नहीं करेंगे तो कौन करेगा? गाँव का परिवार बनेगा तभी यह काम होगा। उसमें सबका हित देखा जायेगा। यह समझाना अत्यन्त आसान बनाया है। किन्होंने आसान बनाया? हमारा काम आसान बनाया उन्होंने, जिन्होंने अनेक वादे किये और जिनसे जनता तंग आ गयी है। यह कांग्रेस, टांग्रेस, फांग्रेस, ये सारी जो 'ग्रेस' हैं, वह कोई काम की नहीं। ये लोग जनता को कहते हैं—हम तुम्हें स्वर्ग देंगे, हमें वोट दो। हमारा स्वर्ग कैसा है? यह देखना हो तो हमारा 'मैनीफेस्टो' पढ़ो। अच्छे-अच्छे वादे करते हैं। वादे तो अच्छे ही करने पड़ते हैं। हम आपको गरीब बनायेंगे, यह तो कोई नहीं

कहता, अच्छा ही कहता है। जनता को कोई यह नहीं समझाता है कि तुम्हारा स्वर्ग और नरक तुम्हारे हाथ में है। एक गीता ही ऐसी है, जो कहती है कि तुम्हारा भला तुम्हारे हाथ में है। तुम्हारा उद्धार तुम्हीं कर सकते हो। तो राजनीतिक लोगों के वादों से लोग निराश हो गये। पराक्रमी लोगों ने अपने पराक्रम से यह जो निराशा पैदा की है, उससे हमारा काम आसान बन गया है।

३१ दिसम्बर को सारा गया जिला ग्रामदान में आ गया। उस काम में शिक्षक लोग ही लगे थे। गया में जो अनुभव आया, उससे भिन्न अनुभव पटना में नहीं आयेगा।

जनता को बनाने की सत्ता आपके हाथ में है, क्योंकि आप ३० साल के लिए हैं। राजनैतिक लोग तो ५ साल के लिए आयेंगे और जायेंगे। 'मैन मे गो एण्ड मैन मे कम', लेकिन आप ३० साल के लिए रहेंगे। और आपके बाद कौन शिक्षक बनेंगे? आपने जिनको सिखाया है, उन्हींमें से शिक्षक बनेंगे, यानी आपकी सतत, अखण्ड सत्ता चलेगी। उसके लिए आपको दो-तीन काम करने होंगे। (१) गाँव-गाँव में जाना, गाँव-सभा बनाने को समझाना, गाँव के 'फ्रेण्ड, फिलासफर, गाईड' बनना। (२) जिन बच्चों को सिखायेंगे, उनको प्रेम देना। आजकल प्रेम की कमी है। (३) रोज कुछ-न-कुछ अध्ययन करना। बाबा की मिसाल देखें। ७४ साल की उमर हो गयी, लेकिन उसका अध्ययन और अध्यापन जारी है। जो ज्ञान आपको मिल चुका है उतने से काम नहीं होगा। नया-नया ज्ञान प्राप्त करना होगा। ज्ञान की उपासना करनी होगी। आपको अहंकार, घमण्ड न हो, इसलिए आप यह समझें कि भगवान् का दिया हुआ ज्ञान आपके पास है। वही दूसरों को देंगे। ऐसी निरहंकार बुद्धि से आप काम करते जायेंगे तो दिल में अत्यन्त समाधान होगा। एक कवि ने बड़ा ही सुन्दर शेर लिखा है—"तू दुनिया में आया तो लोग हँस रहे थे, तू रो रहा था। अब तू हँसता जा, लोग रोते रहेंगे।" "मैंने भगवान् का काम किया। भगवान् का दिया हुआ ज्ञान लोगों के पास पहुँचाया।"—इस आनन्द से आप दुनिया छोड़कर जायेंगे। (३-१-'६९ : बिहारशरीफ)

गया जिलादान की श्रीभागवत-कथा

सन् १९६९ का पहला दिन। गया के कार्यकर्ताओं ने बिहारशरीफ पड़ाव पर 'गया जिलादान' की घोषणा की। बिहार का सातवाँ, पर दक्षिण-बिहार का प्रथम जिलादान। श्री त्रिपुरारीजी नहीं आ सके। चार माह की रात-दिन की दौड़-धूप के बाद आज उन्हें विश्राम का अवसर मिला। श्री दिवाकरजी, श्री केशवभाई और सबसे आगे श्री भागवत झा, जिला शिक्षा-पदाधिकारी।

२८ दिसम्बर को श्री केशवभाई ने मुझे पटना में बताया, "आप जानते हैं, हमारे पास पैसा नहीं था, छियालीस प्रखण्डों का लम्बा-चौड़ा जिला, हमारी संस्था भी बड़ी नहीं, जो कुछ हो सका उसका श्रेय शिक्षकों को है। उनके प्रेरक रहे श्री भागवत झा, जिला शिक्षा-पदाधिकारी। सम्भवतः जिलादान का अर्घ्य 'बाबा' को समर्पित कर उन्होंने अपनी सरकारी सेवा की पूर्णाहुति की। वे १ जनवरी से निवृत्त (रिटायर्ड) हो गये।"

श्री केशवभाई ने बताया कि प्रातः ही 'झाजी' हमारे भूदान-कार्यालय में आ जाते। मुझे तैयार न देख, मुस्कराकर कहते, "इसीसे जिलादान होगा?" और जब यह जानकारी मिलती कि अभी श्री दिवाकरजी जगे नहीं तो उन्हें थोड़ा कष्ट भी होता। नित्य दिन-रात को बारह-एक बज जाता, आखिर नींद भी कहाँ जाय, पर श्री झाजी की पलकों में नींद कहाँ?

निकल पड़ते सड़क पर। कोई गाँव हो, सामने सड़क पर कोई भी व्यक्ति मिल जाय, बस, झाजी की गाड़ी रुक जाती, "आप कौन हैं? शिक्षक?" "नहीं, ग्रामीण?" "क्या आपके गाँव में ग्रामदान का हस्ताक्षर हो रहा है?" यदि उत्तर हाँ में आया तो आगे बढ़े, यदि नहीं तो पहुँच गये उस गाँव के स्कूल-शिक्षक के पास : "भाई, बाबा को कितना कष्ट देना है? कब तक हम संकल्प पूरा करेंगे?" यदि शिक्षक ने बताया कि गाँव के लोग साथ नहीं देते, तो फिर उन्हें अपने साथ लेकर गाँव में घूमने लगते। भव्य व्यक्तित्व, मधुर वाणी, हृदय की आकुलता, कौन ना करता? इसी तरह दूसरा गाँव, तीसरा गाँव, और रात के ग्यारह-बारह बजे तक! क्या मात्र सरकारी आदेश से ही भागवत झा पर जिलादान का 'भूत' सवार हुआ?

गया जिले का काम और भी पहले समाप्त होता। यह सत्य है कि अधिक पैसा पुरुषार्थ को कुंठित करता है, पर इतना तो जरूर चाहिए, जिससे साँस चलती रहे। एक दिन का प्रसंग श्री विद्यासागर भाई ने बताया। वे पटना से गया जिलादान की मददके लिए गये थे। रात को गाँव से लौटकर आये। केशवभाई के परिवार के लोग सो गये थे। जगाया तो मक्के की एक रोटी मिली। श्री विद्यासागर भाई 'मेस' की ओर से निराश लौट रहे थे। पैसे के अभाव में आज खाना नहीं बना। केशवभाई ने उन्हें उसी रोटी में शरीक कर लिया। श्री त्रिपुरारीजी सोच रहे थे कि क्या करें? आखिर उसी रोटी का तीसरा भागीदार इन्हें भी बनना पड़ा। न जाने चार माह में कितनी रात त्रिपुराराजी को उदर-विश्राम करना पड़ा होगा! इस जिले के प्रत्येक प्रखण्ड का काम पूरा करने में सिर्फ दो-तीन सौ रुपये का खर्च प्रति प्रखण्ड आया होगा।

जे० पी० को गया की विशेष चिन्ता थी: "गया का जिलादान कब तक होगा, क्या मेरे विशेष स्नेह ने यहाँ का पुरुषार्थ कुंठित तो नहीं कर दिया?" मुझे याद है २१ जुलाई की उनकी टेहटा की बैठक की एक मुद्रा-एकदम चुप्प! सारे मित्र बैठे थे। "अब मैं आप लोगों से और कुछ नहीं कहूँगा, मैं सोच रहा हूँ कि मुझमें ही कुछ दोष है।"

जे० पी० बाहर-बाहर रहे, पर उनकी बेचैनी गया के मित्रों में काम कर रही थी। परमात्मा ने वहाँ के मित्रों को शक्ति दी, और गया जिलादान पूरा हो गया।

चलता मुसाफिर ही पायेगा
मंजिल और मुकाम रे!
कायर का नहीं काम,
रे भाई, कायर का नहीं काम!

—निर्मलचन्द्र

www.vinoba.in

जिलादान के बाद बलिया में संगठन और विकास की योजना

शिक्षण

शिविर और गोष्ठी : विचार-शिक्षण की दृष्टि से तीन प्रकार के शिविर सोचे गये :

विचार-शिक्षक शिविर : इस तरह के शिविर जिले की तीनों तहसीलों में तहसील-स्तर पर किये जायँ, जिनमें उस तहसील के श्री गांधी-आश्रम के कार्यकर्ता, चुने हुए शिक्षक तथा उद्‌बुद्ध नागरिक शरीक हों। एक शिविर में संख्या सामान्यतः २५-३० हो। इस प्रकार के शिविरों में दीक्षित मित्र अपने-अपने गाँव और क्षेत्र में विचार-शिक्षण का काम करेंगे। जिलेभर में ऐसे लगभग दो सौ विचार-शिक्षक तैयार किये जायेंगे।

ग्रामीण गृहस्थ शिविर : जिन गाँवों में उत्साह हो और जिनकी ओर से माँग हो, उनमें दो या तीन दिन के लिए अपने एक या दो कार्यकर्ता साथी जायेंगे। दिन भर के काम-काज के बाद गाँव के लोग शाम को एक घंटे के लिए इकट्ठा होंगे और हमारे साथी उनके साथ चर्चा करेंगे। इस तरह के शिविर माँग आने पर बाँसडीह सघन क्षेत्र के बाहर भी किये जायेंगे, ताकि आन्दोलन की व्यापकता बनी रहे। सघन कार्य के साथ व्यापकता का कार्य आवश्यक है।

गर्मी में बाँसडीह सघन क्षेत्र में एक बड़ा श्रम-शिविर किया जायगा।

कार्यकर्ता प्रशिक्षण : आश्रम के कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण एक सुव्यवस्थित अभ्यास-क्रम के अनुसार हो। इस अभ्यास के आधार पर उनकी लिखित और मौखिक परीक्षा भी ली जाय, और प्रमाण-पत्र भी दिया जाय। परीक्षा-फल उनकी दक्षता के मूल्यांकन का अंग माना जाय। इस योजना में वे ही कार्यकर्ता शरीक होंगे, जो होना चाहेंगे। कार्यकर्ताओं के लिए विशेष रूप से ६ महीने में एक शिविर होगा, जिसमें उनकी परीक्षा का कार्यक्रम रखा जायगा।

शिविर-संयोजन और संगठन : यह तय हुआ कि २४ जनवरी से ३० जनवरी '६९ तक एक हफ्ते में धीरेन्द्रभाई तीनों तहसीलों में तहसील-स्तरीय शिविर लेंगे।

जिले में शिविरों का संयोजन सुदिष्टपुरी इण्टर कालेज के प्राध्यापक श्री शिवकुमार मिश्र तथा अपने कार्यकर्ता साथी श्री कमलापति भाई करेंगे।

रुचि रखनेवाले नागरिकों की सुविधा की दृष्टि से फेफना में ग्रंथ-संग्रह किया जायगा, जिसमें सर्वोदय तथा आधुनिक विचार के चुने हुए ग्रंथ होंगे।

खादी, ग्रामोद्योग

बाँसडीह सघन क्षेत्र में खादी-कार्य : (१) बाँसडीह, मनीयर, और बेरूआरबारी प्रखण्डों का एक सघन क्षेत्र माना जायगा। खादी की दृष्टि से प्रश्न हुआ कि किन गाँवों को अम्बर चरखे की दृष्टि से प्राथमिकता दी जायगी? तय हुआ कि पहले उन गाँवों को लिया जाय, जो 'ग्राम-स्वराज्य' तथा 'ग्रामकोष' के संगठन की दृष्टि से आगे बढ़ें।

सबसे पहले गाँव अपनी ग्राम-स्वराज्य सभा बनाये। ग्राम-स्वराज्य सभा की ओर से एक 'उद्योग समिति' गठित हो। यह समिति गाँव के लिए ३ साल की औद्योगिक विकास-योजना बनायेगी, और अम्बर की माँग करेगी। चरखा वस्त्र-स्वावलम्बन के आधार पर ही दिया जायगा। उद्योग-समिति अपने गाँव में बुनाई के प्रशिक्षण की व्यवस्था करेगी, जिसकी सुविधा आश्रम की ओर से दी जायगी। लेकिन जबतक ऐसा नहीं होता तबतक सूत के बदले कपड़ा दिया जायगा, पैसा नहीं। गाँव में बुनाई की व्यवस्था हो जाने पर गांधी-आश्रम गाँव की समिति से अतिरिक्त कपड़ा लेगा, सूत नहीं। ग्राम-स्वराज्य सभा पूँजी के लिए 'ग्रामकोष' इकट्ठा करेगी, ताकि रुई आदि का स्टाक गाँव में रह सके।

(२) ऐसे गाँवों में जो अम्बर-शिक्षक परिश्रमालय चलाने के लिए भेजे जायेंगे, वे अम्बर का प्रशिक्षण तो देंगे ही, साथ-ही-साथ उनका एक मुख्य काम यह भी होगा कि वे ग्राम-सभा को मजबूत बनायें। ग्राम-स्वराज्य सभा की नियमित बैठकें हों। अम्बर-शिक्षक स्वयं ग्राम-स्वराज्य की दृष्टि ग्रहण कर सके इसके लिए उन्हें धीरेन्द्रभाई के शिविर में शरीक किया जायगा। यह अच्छा होगा कि दृष्टि लेकर ही कार्यकर्ता गाँव में जायँ।

फरवरी से अम्बर-परिश्रमालय ऐसे ही गाँवों में खोले जायेंगे, जो ऊपर लिखी दो शर्तें पूरी करेंगे। गाँवों का चुनाव श्री बद्रीसिंहभाई और जालिमभाई मिलकर करेंगे।

सर्वश्री चौबेजी, बंशराजभाई, जालिम-भाई तथा बद्रीसिंहभाई विशेष रूप से एक-एक परिश्रमालय से जुड़ेंगे और उसे ग्राम-स्वराज्य की भूमिका में आगे बढ़ाने का प्रयत्न करेंगे।

हर अम्बर-परिश्रमालय में स्त्रियों के अलावा कुछ पुरुष भी लिये जायेंगे, जिन्हें यंत्र-सुधार का सामान्य ज्ञान कराया जायगा, ताकि गाँव में यंत्रों की देखभाल हो सके। जहाँ तक हो सके, शीघ्र एक और दो तकुए के अम्बर की व्यवस्था की जायगी।

उद्योग : चरखे के अलावा गोबर-गैस और कुम्हारी उद्योग पर तुरन्त ध्यान दिया जायगा। इनका सीधा सम्बन्ध खेती और किसान की आवश्यकता से है।

संगठन

ग्राम-स्वराज्य ट्रस्ट की स्थापना : जिले में संगठन और विकास के कार्यों के लिए एक ग्राम-स्वराज्य ट्रस्ट की स्थापना की जायगी, जिसमें सात सदस्य होंगे। ट्रस्ट की शीघ्र रजिस्ट्री करा ली जायगी और सारे काम उसीके माध्यम से होंगे। गाँवों की ग्राम-स्वराज्य सभाओं के आधार पर प्रखण्ड-स्तरीय सभा के बन जाने पर ट्रस्ट अपनी प्रवृत्तियाँ उन संस्थाओं को सौंप देगा। यह क्रम एक क्षेत्र के बाद दूसरे क्षेत्र में चलता रहेगा, जब तक कि पूरा जिला पुरुषार्थ में स्वाश्रयी न हो जाय।

बैठकें : अपने मुख्य मित्रों की बैठक हर महीने होगी। पहली बैठक बाँसडीह में धीरेन्द्रभाई के साथ २६ जनवरी को होगी। हर बैठक में अगली बैठक की तारीख और स्थान का निर्णय कर लिया जायगा।०

पठनीय मननीय

नयी तालीम

शैक्षिक क्रांति का अग्रदूत मासिकी

वार्षिक मूल्य : ६ रु०

सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी-१

www.vinoba.in

प्रदेशदान का लक्ष्य और अस्थिर राजनीतिक संदर्भ

आखिर, यह प्रदेशदान क्यों ? ग्रामदान हुआ, ग्रामदान से आगे बढ़े तो प्रखण्डदान हुआ, जिलादान हुआ, अब बात होने लगी कि प्रदेशदान हो, क्यों ?

जयप्रकाश नारायण

आन्दोलन के विकास के साथ-साथ यह अनुभव आता गया कि आज जिस प्रकार की हमारी राज्य-व्यवस्था है, उसकी दो इकाइयाँ हैं—एक तो राष्ट्रीय इकाई, जिसमें संसद और राष्ट्रीय मंत्रिमण्डल है, उसके साथ 'सुप्रीम कोर्ट' है, और उसके बाद प्रादेशिक इकाई है।

राज्य की इकाई प्रदेश तक आकर रुक जाती है। और अनुभव आता है कि यह जो शासन की इकाई है, राज्य की इकाई है, इस पर आन्दोलन का प्रभाव नहीं पड़ता है, इसका परिवर्तन नहीं होता है, तो फिर सर्वोदय समाज की रचना की जो कल्पना है वह साकार नहीं हो सकती। एक गाँव में जितना करना चाहें करें, थोड़ा-बहुत उसका दर्शन हो सकता है, वह भी परिभाषा से ही, लेकिन वह अपूर्ण है। एक गाँव में, या सौ-दो-सौ गाँवों में बहुत परिश्रम करके कुछ नया कर भी लिया गया और ऐसा खयाल हुआ कि यह कुछ नया हो गया तो दूसरे गाँव भी नकल करेंगे, उनके ऊपर असर हो जायगा, ऐसा होता नहीं है। और, यह हजारों बरसों का इतिहास है कि जो 'आइडियल कालोनीज' स्वप्नद्रष्टाओं ने अपने-अपने स्वप्न के अनुसार समय-समय पर बसायीं और आज भी ऐसी 'कालोनीज' हैं यूरोप-अमेरिका में, उनसे पूरा समाज नहीं बदला।

प्रशासनिक इकाई पर विचार का प्रभाव जरूरी

इसलिए जब तक शासन की इकाई है, तब तक उसके ऊपर अगर विचार का प्रभाव नहीं होता है, उसके जो प्रतिनिधि चुनकर आते हैं वे सब या अधिकांश उस विचार के नहीं होते हैं तो जिस तरफ हम बढ़ना चाहते हैं, बढ़ नहीं पाते। इसलिए प्रदेशदान हमारा लक्ष्य बना है। जब हर प्रदेश का दान हो जायगा तो भारत में बाकी क्या रहेगा? प्रदेशों को छोड़कर तो भारत है नहीं! इस दान का मतलब क्या है? यह तो एक प्रकार के जीवन-दर्शन का प्रतीकात्मक नाम है। गाँव का जीवन हो, जिले का हो या प्रदेश का हो, जिस जीवन में पारस्परिकता हो, परस्परावलम्बन हो, एक दूसरे के लिए त्याग और बलिदान की भावना हो, सहकारी वृत्ति हो, एक-दूसरे की मदद करके जीने की तैयारी हो, ऐसी समाज-रचना का संकेत है इस 'दान' में।

यह बात अब बिलकुल स्पष्ट है कि वर्तमान सारी राजनीति और अर्थनीति का परिवर्तन होना चाहिए। यह कैसे होगा, जब तक कि यह राज्य की इकाई अपने हाथ में नहीं आती है? प्रदेशदान के बिना हम अपने काम में सफलता प्राप्त नहीं कर सकते। न तो देश में प्रगति हो सकती है, न समाज में संतुलन कायम हो सकता है।

अस्थिरता की राजनीति और मध्यावधि चुनाव

सन् १९६७ के चुनाव ने भारत की राजनीति के स्वरूप को बिलकुल बदल दिया है। हुकूमतें जल्दी-जल्दी बदलने लगी हैं। इसके लिए तरह-तरह के जोड़-तोड़ किये जाते हैं। अब बिहार, उत्तर प्रदेश, पंजाब, पश्चिम बंगाल में मध्यावधि चुनाव होने जा रहे हैं। मध्यावधि चुनाव के बाद क्या होगा, यह सबके सामने प्रश्नचिन्ह है। कोई नहीं कह सकता है कि क्या होगा; फिर कोई ऐसा शासन कायम होगा, जो पाँच वर्ष के लिए स्थिर रह सकेगा या नहीं। इन्दिराजी कहती हैं—मैं कांग्रेस के खिलाफ बात नहीं कर रहा हूँ, यह केवल एक राजनीतिक विश्लेषण है—कि देश में स्थायित्व हो, इसकी गारन्टी सिर्फ एक है—कांग्रेस। लेकिन क्या यह सही रह गया है? सन् १९६७ के चुनाव के बाद भारत के सबसे बड़े प्रदेश—उत्तर प्रदेश में जो स्वयं इन्दिराजी का प्रदेश है, चन्द्रभानु गुप्ता मुख्यमंत्री हुए। लेकिन क्या स्थिर रह सके? वहाँ '६७ के बाद स्थायी शासन रह सका? क्या कांग्रेस यह गारण्टी कर सकेगी कि उत्तर प्रदेश में फिर गड़बड़ी नहीं होगी? मध्यावधि चुनाव हो गया हरियाणा में, वहाँ डाँवाडोल परिस्थिति कायम है। आयाराम-गयाराम का खेल वहीं से शुरू हुआ था, इस वक्त भी उसका दर्शन आपको मिल रहा है। भगवतदयाल शर्मा ने कहा कि हमारे साथ इतने लोग हैं, लेकिन दूसरे दिन हुआ कि नहीं, कुछ चले गये! यह भी एक ढंग निकल गया। कोई चुनौती देता है कि बुलाइए विधान सभा को, उसमें तय कर लीजिए, तो विधानसभा नहीं बुलायेंगे। अब इसके बारे में कुछ सोचना तो चाहिए जो विद्वान लोग हैं उनको। पश्चिम बंगाल में १८ दिन रह गये थे सिर्फ उस विधानसभा के। यद्यपि मैं अजय बाबू की मिनिस्टरी का बिलकुल ही प्रसंशक नहीं हूँ, बहुत खराब मिनिस्टरी रही उनकी, ऐसा मैं मानता हूँ, लेकिन लोकतंत्र तो था! उनको 'डिसमिस' कर दिया गया।

देश में बहुत-सी पार्टियाँ हैं, और इन पार्टियों के होने का एकमात्र आधार वैचारिक है, ऐसा माना जाता है। भिन्न-भिन्न विचारधाराएँ हैं, भिन्न-भिन्न हित हैं। इन हितों और विचारों के आधार पर भिन्न-भिन्न पार्टियाँ बनी हैं। लेकिन हमने तो देखा कि मंत्रिमण्डल बनाने के लिए एक तरफ साम्यवादी पार्टी और दूसरी तरफ स्वतंत्र पार्टी और जनसंघ का गठबन्धन हो गया। विचारधाराओं में इतना अन्तर जिसका कोई हिसाब नहीं, लेकिन इनकी मिलीजुली सरकार बन गयी, क्या अर्थ है इसका? आज हम अमुक पार्टी के टिकट पर चुने गये और वहाँ जाकर कुर्सी के लिए इधर से उधर चले गये! तो इन विचारधाराओं का, रीति-नीति का, इन राजनीतिक दलों का कोई अर्थ नहीं रहा, कोई मतलब नहीं रहा। यह एक खिलवाड़ हो रहा है अपने देश की जनता के भाग्य के साथ। अगर ये उलट-फेर बराबर होते रहेंगे, तो क्या हालत होगी?

तानाशाही का विकल्प एक भयंकर भ्रमजाल

www.vinoba.in

ऐसी हालत में हमें एक ही विकल्प नजर आता है, सर्वोदय के लोगों को तो नहीं, लेकिन अधिकांश पढ़े-लिखे लोगों को, कि लोकतंत्र तो विफल हो गया, अब तानाशाही चाहिए ! तानाशाह का चुनाव तो दुनिया में कहीं हुआ नहीं, किसीको 'डिक्टेटर' होना होगा, तो होगा। लेकिन यह एक भ्रम है, जिसे दूर करना चाहता हूँ। जहाँ तानाशाही हो जाती है, वहाँ नक्शा बिलकुल बदल जाता है, दंगा-फसाद बिलकुल नहीं होता है, निर्माण का काम बड़ी तेजी के साथ चलता है, ऐसी बात नहीं है। चीन में आप देख रहे हैं कि दंगा-फसाद हो रहा है, पाकिस्तान में हो रहा है। इराक की बात लीजिए। बादशाह को गद्दी से उतारा गया, उनकी लाश बगदाद में घसीटी गयी। उसके बाद जनरल कासिम हुए वहाँ के तानाशाह। अब कासिम साहब की आर्मी में विद्रोह हुआ, उनकी जगह पर आरिफ साहब हुए, वह भी सेना के। आरिफ साहब की हवाई जहाज की दुर्घटना में मृत्यु हो गयी तो अब उनके छोटे भाई वहाँ राष्ट्रपति बने, 'डिक्टेटर' बने। उनका क्या हाल है ? समस्याएँ हल हुई क्या वहाँ की ? नेविन साहब ने बर्मा में क्या कर लिया ? क्या बर्मा में बहुत भारी प्रगति हो गयी ? वहाँ जो गड़बड़ी है उसको दबा दिया गया है, लेकिन पहाड़ों में विद्रोह फैला हुआ है। चीनियों के साथ वहाँ के भी लोगों ने संपर्क कर रखा है। सुकर्णो से बड़ा डिक्टेटर एशिया में कौन होगा ? घाना के एन्क्रूमा से बड़ा कौन होगा ? आर्थिक दुर्दशा ऐसी हो गयी इण्डोनेशिया की कि सारी आर्थिक रचना ही टूट गयी, डिक्टेटर सुकर्णो साहब ने ऐसी कुशलता से काम किया था। वास्तव में तानाशाही एक भयंकर भ्रम है।

एक ही वैकल्पिक शक्ति : जनता की

तो फिर इसका विकल्प क्या है ? जनता ही इसका विकल्प है। जनता की शक्ति के अलावा और कोई शक्ति है नहीं। वह शक्ति नीचे से प्रकट करनी है। कैसे करना है ? मान लीजिए कि प्रदेशदान हो गया २ अक्तूबर '६९ तक। उसके बाद दो-चार साल लगा देंगे इसको पुष्ट करने में, गाँव-गाँव में ग्रामसभा का निर्माण करने में। ग्रामसभा का काम शुरू हो, गाँव के लोग बैठकर विचार करें, ग्राम-कोष बने, सर्व-सम्मति से या आम राय से उनके निर्णय होने लगे, जो झगड़े हों, उनको शांति से निपटाया जाय, और इस प्रकार नीचे का जीवन कुछ जाग्रत हो, सुव्यवस्थित हो। तब फिर ग्रामसभाओं के आधार पर, पार्टियों के आधार पर नहीं, इसी संविधान के अन्तर्गत एक स्थायी राज्य की, प्रशासन की स्थापना हो सकती है।

स्वराज्य हुए २०-२१ वर्ष हो गये। अब और २१ वर्ष तो हरगिज नहीं लगने चाहिए, नीचे से इस शक्ति का निर्माण करने में। फिर राजनीतिक दलों का भी परिवर्तन होगा। आज हम उसकी कल्पना नहीं कर सकते कि किस प्रकार का परिवर्तन होगा, उनकी क्या आवश्यकता रहेगी, किस हद तक वह सेवा के क्षेत्र में काम कर सकेंगे। प्रतिनिधियों को खड़ा करना, और प्रतिनिधियों को चुनकर भेजना, यह जो मुख्य काम है राजनीतिक दलों का, यह काम उनका खतम हो जायेगा। ग्रामसभाओं के प्रतिनिधि होंगे, जिनका काम होगा प्रतिनिधि खड़ा करने का, प्रतिनिधि के चुनाव का। राजनीतिक अस्थिरता की परिस्थिति में सर्वोदय-आन्दोलन के द्वारा—चूँकि यह बुनियाद का आन्दोलन है, गाँव-गाँव के अन्दर शक्ति पैदा करनेवाला, संगठन खड़ा करनेवाला आन्दोलन है इस कारण से—स्थिरता आने की सम्भावना है। और, शायद उतने बरसों में नहीं, जितने बरस स्वराज्य के बाद बीत चुके हैं। उससे आधे या चौथाई काल में भी इसके सफल होने की सम्भावना है। यह मुट्ठी भर सर्वोदय-कार्यकर्ताओं से ही नहीं होगा, इसके लिए गाँव-गाँव से नया नेतृत्व पैदा करना होगा। शिक्षकों, नागरिकों सभी राजनीतिक पक्षों में से बहुत से लोग जो इस विचार को माननेवाले होंगे, उन सबकी सम्मिलित चेष्टा और शक्ति से यह होगा।

हमें अपनी शक्ति के लिए, अपनी सत्ता के लिए, अपनी पार्टी के लिए नहीं, जनता के राज्य के लिए अपने को पीछे रखकर, अपने को भूलकर इस कार्यक्रम में लगना होगा।

(राजस्थान सर्वोदय-सम्मेलन के अवसर पर ३० दिसम्बर '६८ को दिये भाषण से)

★

मेरा कलमा···मेरी गायत्री

···सारा भारत पुकारकर कहे कि 'गांधी जो कहता है वह निकम्मी बात है, मियाँ-महादेव की दोस्ती नहीं हो सकती,' तो भी मैं कहूँगा कि यह झूठ है, मैं सच्चा हूँ, हिन्दू-मुसलमान जरूर एक हो सकेंगे। यदि खुदा, ईश्वर, सत्य जैसी एक भी चीज हो तो मैं कहता हूँ कि हिन्दू-मुस्लिम एकता भी सत्य वस्तु है। खादी को भारत जला डाले और कहे कि 'इसमें कुछ नहीं' तो भी मैं कहूँगा कि चरखे में ही उद्धार है, भारत पागल हो गया है। और इसी प्रकार अनेक हिन्दू मेरे पास आकर बड़े-बड़े शास्त्र और स्मृतियाँ लाकर उद्धरण देंगे और कहेंगे कि सनातन धर्म में अस्पृश्यता के लिए स्थान है तो भी मैं उनसे कहूँगा कि तुम्हारी स्मृति, तुम्हारे शास्त्र झूठे हैं और मैं सच्चा हूँ। इस प्रकार मेरा कलमा, मेरी गायत्री, जिसे मैं मानता हूँ, वह सुनाकर मेरा सत्याग्रही होने का दावा सुनाऊँगा कि जिससे ईश्वर कहेगा कि मेरे इस बन्दे ने जो सुनाने की बात थी वह सच सच सुना दी है।

—मो० क० गांधी

दिनांक : २१-१२-'२६ ['महादेव भाई की डायरी' : भाग–११ : पृष्ठ २३२]

www.vinoba.in

रचना के काम असहयोग की भूमिका

"हमारे देश का सत्तारूढ़ दल रचना के कामों में पूरी तरह सक्रिय नहीं रहा। वह अधूरे मन से इधर लगा है, किन्हीं क्षेत्रों में सत्तारूढ़ दल के हितैषी व्यक्ति दोष-निवारण के लिए उठे भी, तो इस दल ने उन्हें अपना पूर्ण सहयोग नहीं दिया। उदाहरण के तौर पर आचार्य विनोबा भावे ने भूदान-आन्दोलन का काम अपने हाथों में लिया। पिछले अठारह वर्षों से उनकी यह सतत चेष्टा है कि गाँवों में भूमिहीन तथा छोटे किसानों को राहत मिल जाय, किन्तु सत्तारूढ़ दल उनको तथा उनके अनुवर्तियों को अभी तक असफल ही बनाये हुए हैं। यदि वह इस दिशा में सहयोग करने के लिए अग्रसर हो जाता तो एक क्षेत्र में शांत वातावरण में रचनात्मक बुद्धि का प्रताप फैल सकता। आज गाँव उपेक्षित हैं। राजनीतिक दलों और विशेषकर सर्वाधिक समर्थ सत्तारूढ़ दल के नेता ग्रामीण जनता से एकदम अलग-अलग हैं। उन्हें न अपने लिए उधर दत्तचित्त होने की आवश्यकता महसूस होती है और न विनोबा और जयप्रकाश नारायण जैसे लोगों के लिए। ग्रामीण क्षेत्रों में जहाँ-तहाँ होनेवाले विद्रोह भी उनकी 'योग (भोग) निद्रा' को भंग नहीं कर पा रहे। इसलिए गंभीरता और दायित्व उनसे छुट्टी लेकर कहीं चले-से गये हैं।"

(उपर्युक्त बात लिखी है श्री हरिवंश शर्मा ने 'बदलती अन्तरराष्ट्रीय परिस्थितियों में भारत की मूलभूत आवश्यकता और उनका जटिल समाधान' नामक लेख में, जो ३० दिसम्बर '६८ के 'नवभारत टाइम्स' में प्रकाशित हुआ है।)

पख्तूनिस्तान की माँग का समर्थन

"श्री जयप्रकाश नारायण का यह कहना गलत नहीं कि यदि भारत-सरकार पख्तूनिस्तान की माँग का समर्थन करेगी तो वह उचित ही कहा जायगा। यह ठीक है कि यह एक विदेशी मामला है और भारत सरकार उसमें हस्तक्षेप करके पाकिस्तान से अपने सम्बन्ध बिगाड़ना न चाहे, पर पहली बात तो यह है कि विभाजन से पूर्व जब इस प्रकार का एक समझौता नेताओं के बीच हुआ था कि उप-महाद्वीप के विभिन्न जातियों के पृथक् अस्तित्व को खत्म नहीं किया जायेगा तो पख्तूनों को पख्तूनिस्तान क्यों नहीं मिलना चाहिए? विभाजन से पूर्व वह भारत का ही अंग था, इसलिए भारत सरकार का हस्तक्षेप अथवा पख्तूनों की माँग का समर्थन किसी हद तक जायज ही कहा जा सकता है।"*

उर्दू नागरी लिपि में

"सर्वोदय-नेता आचार्य विनोबा भावे ने जो यह कहा है कि यदि उर्दू नागरी लिपि में लिखी जाय तभी भारत में पनपेगी और राष्ट्रीय जीवन में यह महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकेगी, उससे बड़ा सत्य और क्या हो सकता है!"*

* **'नवभारत टाइम्स' : ३०-१२-'६८ के अंक के 'विचार-प्रवाह' स्तम्भ से।**

राजनीतिक आवाहन

"पूना में आन्तरभारती के मंच से श्री गजेन्द्रगडकर ने आवाहन किया है कि जिन लोगों ने देश की आजादी की लड़ाई में क्रान्तिकारियों के रूप में काम किया है, ऐसे उच्च शिक्षित, सुविचारक और सामाजिक चेतना से सम्पन्न राजनीतिक नेताओं को सक्रिय राजनीति से अवकाश ग्रहण न करके फिर से मैदान में आ जाना चाहिए। उनके मतानुसार जबतक ऐसा नहीं होगा, यह देश जनतांत्रिक सामाजिक एवं प्रशासनिक खतरों के बीच से सुगमता से नहीं गुजर सकता। उन्होंने सर्वश्री जयप्रकाश नारायण, पी० एच० पटवर्धन और अच्युत पटवर्धन को आवाहन किया कि वे फिर से राष्ट्रीय मंच पर उतरें और राजनीति के भद्दे प्रदर्शन को रोकने में सहायक हों। जब कभी अर्द्धराजनीतिक मंच पर गंभीर चर्चा होती है तो बार-बार यह बात दोहरायी जाती है कि श्री जयप्रकाश नारायण पुनः राजनीति में प्रवेश करें। इस बार यह नाम अकेला नहीं है, वरन् स्वाधीनता-संग्राम के दो और प्रमुख सेनानियों के नाम उसके साथ जुड़े हुए हैं। इसमें सन्देह नहीं कि हमारे बीच इस समय ऐसे महापुरुष हैं, जिन्होंने भारतमाता की मुक्ति के लिए अपना सर्वस्व-बलिदान कर देने में कभी हिचक नहीं दिखाई। यदि वे पुनः राजनीति में प्रवेश करें, तो उनकी बात सुनी जायेगी। परन्तु यह नहीं भूलना चाहिए कि यदि आजादी के बाद की राजनीति इतनी सहज सुगम होती तो स्वयं श्री जयप्रकाश नारायण को विरक्त होने की आवश्यकता न होती। हालाँकि राजनीति से बाहर रहकर भी वे कम उपयोगी कार्य नहीं कर रहे हैं। तथापि देश को उनसे जो अपेक्षाएँ थीं, वे पूरी नहीं हुईं। ईमानदार और सत्यनिष्ठ राजनीतिक कार्यकर्ताओं का जहाँ तक ताल्लुक है, अनेक ऐसे समकालीन राजनीतिक नेता हैं, जिनकी बुलंदी किसी राजनीतिक दल की सीमा से पार निकल जाती है। यदि जनतांत्रिक सामाजिक पद्धति में अन्यान्य राजनीतिक दलों द्वारा जनतंत्र को मजबूत बनाना है, तो यह भी जरूरी है कि वक्त की जरूरत के मुताबिक कुछ नेता अपने-आप को ढालें, अन्यथा उनकी स्थिति वही हो जाती है, जो तालाब से बाहर निकाली हुई सीपी की; यदि ये तीनों नेता फिर से राजनीति में प्रवेश करें तो निश्चय ही अपवाद साबित होंगे। उनके इस उदाहरण से अन्य नेताओं को भी फिर से राजनीति में प्रवेश करने का प्रोत्साहन मिलेगा।"

—'नवभारत टाइम्स' : ३१ दिसम्बर, '६८

कृषि-क्रान्ति

"इस विषय में दो रायें नहीं हो सकतीं कि इस देश का उद्धार कृषि-क्रान्ति से ही हो सकता है, जिस देश की अस्सी प्रतिशत जनता गाँवों में रहती हो और जिसके अर्थचक्र की धुरी खेती हो, उसमें इसके सिवा और कोई रास्ता हो भी क्या सकता है? पर क्रान्ति की बात करना जितना सरल है, उसे अमल में लाना उतना ही मुश्किल है। जितने भी राजनीतिक दल हैं, वे सब इस बात पर जोर देते हैं। पर उसके स्वरूप और साधनों के विषय में कोई स्पष्ट तस्वीर उनके सामने नहीं है। कृषि-क्रान्ति के नारे के पीछे उनका मुख्य उद्देश्य वोट बटोरना होता है, पर इस तरह

तो देश में कृषि के क्षेत्र में क्रान्ति नहीं आ सकती।

www.vinoba.in

सब सुधार-कानूनों और कृषि-सम्बन्धी नयी व्यवस्थाओं के बावजूद आम किसान की हालत बहुत अधिक अच्छी नहीं हुई है। भूमि पर बहुत भार है। भूमिधरों की संख्या बढ़ी अवश्य है और वे पहले की अपेक्षा समृद्ध भी हुए हैं, परन्तु भूमिहीन किसानों की संख्या उनसे कहीं अधिक है और वे मुश्किल से पेट भर जुटा पाते हैं। उत्पादन को ऐसी गति नहीं मिल सकी है कि देश का अर्थचक्र आत्म-निर्भरता की दिशा में बढ़ सकें। खाद्यान्न के क्षेत्र में विदेशों का मुँह अब भी जोहना पड़ रहा है। इस स्थिति का एक अन्य परिणाम यह हो रहा है कि आम आदमी का जीवन अधिकाधिक महँगा होता जा रहा है और सरकार को विकास के लिए आवश्यक धन नहीं मिल पा रहा। इसका एक कारण यह हो सकता है कि कृषि के विकास के लिए जितने साधनों की आवश्यकता है, वे समय पर नहीं जुट पा रहे हैं। परन्तु उसके मार्ग में एक और भी रोड़ा है, जिसकी ओर श्री जयप्रकाश ने ध्यान खींचा है।

यह सही है कि जिस प्रकार का लोकतंत्र हमारे देश में चल रहा है, उसमें यदि सत्ता का विकेन्द्रीकरण ग्राम-स्तर तक कर दिया गया तो उससे अव्यवस्था का भय हो सकता है, परन्तु इसके साथ यह भी सत्य है कि जब तक हर किसान अपनी उन्नति के विषय में आश्वस्त नहीं होगा और यह अनुभव नहीं करेगा कि वह अपने भाग्य और उसे पूरा करनेवाले साधनों का स्वामी स्वयं है, तबतक कृषि-क्षेत्र में क्रान्ति नहीं हो सकती। क्रान्ति के लिए भौतिक साधन और कानून तो आवश्यक हैं ही, किन्तु मानव की इच्छा और प्रयत्न का उससे भी अधिक महत्व है। वही उन साधनों में जीवन भर सकती है और वे तबतक जागृत नहीं हो सकते जब तक सर्वोदय की भावना और प्रेरणा उसके पीछे न हो। जिन राजनीतिक दलों को केवल शासनसूत्र संभालने की चिन्ता है वह उसे जागृत नहीं कर सकते।

इस प्रसंग में श्री जयप्रकाश नारायण ने जो चेतावनी दी है वह भी उपेक्षणीय नहीं है, वे हिंसा के हामी नहीं हैं, परन्तु उनका यह अनुमान गलत नहीं कहा जा सकता कि यदि कृषि-क्रान्ति के लिए सर्वोदय का रास्ता नहीं पकड़ा गया—भूमिहीनों को भूमि का स्वामी और कृषि-साधनों पर किसान का नियंत्रण अनुभव नहीं होने दिया गया, तो लोग हिंसात्मक तरीकों पर उतर सकते हैं। यदि ऐसा होता है तो देश में व्यवस्था की दृष्टि से यह बहुत खतरनाक होगा। इसलिए यह बहुत जरूरी है कि जहाँ सरकार साधनों की व्यवस्था कर रही है वहाँ कुछ ऐसा भी करे, जिससे किसान इस क्रान्ति के लिए अधिक से अधिक योग दे सकें।"

—'नवभारत टाइम्स' के १ जनवरी '६९ अंक में प्रकाशित सम्पादकीय नोट से।

जनमत के जमाने में

आज हिन्दुस्तान की जो ५० करोड़ जनता है, उसके जनमत को साथ लेने के लिए तीन शक्तियाँ काम कर रही हैं—अमेरिका, रूस और चीन की। इन तीनों शक्तियों के पास ऐटम बम, हाइड्रोजन बम आदि सारी शक्तियाँ हैं, लेकिन वे जनमत को नहीं पकड़ पा रही हैं। हमारे देश में अकाल पड़ा तो अमेरिका ने करोड़ों रुपये की मदद दी, वह जनमत को पकड़ने के लिए ही। अमेरिका अच्छी तरह जानता है कि हिन्दुस्तान दुनिया का सबसे बड़ा प्रजातांत्रिक देश है। अगर हिन्दुस्तान में प्रजातंत्र नहीं रहेगा तो अमेरिका का प्रजातंत्र भी नहीं रहेगा। अमेरिका सोचता है कि यहाँ जब प्रजातंत्र रहेगा, तो हिन्दुस्तान की जनता का जनमत अमेरिका की तरफ रहेगा। रूस और चीन, दोनों कम्युनिस्ट देश होते हुए भी एक-दूसरे के शत्रु हैं। तो रूस अपनी 'थियासफी इन्फ्लूएन्स' के बारे में सोचता है, और वह भी हिन्दुस्तान का जनमत पकड़ना चाहता है। चीन कहता है कि अमेरिका, रूस क्या करेंगे? हिन्दुस्तान की ५० करोड़ जनता हमारी तरफ रुख करेगी तो हम सारी दुनिया को फतह कर देंगे। इस तरह से हिन्दुस्तान का जनमत अपनी तरफ लेने के लिए सब प्रयत्नशील हैं।

रूस ने यहाँ भारत में बड़े-बड़े कारखाने खोले हैं : भिलाई में, ऋषिकेश में, हरिद्वार में। इसके साथ-साथ 'सोवियत भूमि' आदि पत्रिकाएँ चलती हैं, 'हिन्दी-रूसी भाई-भाई' के नारे लगते हैं। ऐसी स्थिति में हिन्दुस्तान का अपना कोई विचार नहीं होगा, तो दूसरे देशों के विचारों का हम शिकार बनेंगे और कौन जनमत को पकड़ सकेगा, कहना मुश्किल है।

जनमत को वही रख सकेगा, जो दलगत राजनीति से ऊपर हो। 'पार्ट' कहते हैं हिस्से को, और 'पार्टी' कहते हैं हिस्सेदार को। आज जितनी पार्टियाँ हैं, सब जनमत की हिस्सेदार हैं, तो एकमत का राज्य कैसे हो सकता है? एक मत का राज्य तो तभी होगा, जब दलगत राजनीति से ऊपर उठकर जनमत बनाया जा सकेगा।

तो, हिन्दुस्तान की जो परिस्थिति है, हम उसको कब बदल सकेंगे? जब हिन्दुस्तान में एकता बनेगी और विभाजित करनेवाली चेष्टाएँ बन्द की जायेंगी तब। हिन्दुस्तान की एकता सबल होगी तो सारी शक्तियाँ—एटम बम, हाइड्रोजन बम की पड़ी रह जायेंगी, हिन्दुस्तान का कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकेगा। लेकिन हिन्दुस्तान के जनमत को विभाजित करने में लोगों को सफलता मिल गयी तो हिन्दुस्तान को आसानी से बरबाद किया जा सकता है।

गांधीजी के हाथ में क्या पुलिस थी? नहीं, उनके साथ में जनमत था। देश की सबसे बड़ी शक्ति है, "मारल आफ दि पीपुल"। इसके लिए एकता और जन-जागृति चाहिए। इसीलिए हम गाँव-गाँव जाते हैं। लोगों से, चेतना पैदा करने में और एक होकर अपनी समस्याओं को अपनी शक्ति से हल करने की बात कहते हैं। गाँव-गाँव सचेत होंगे तो सारे समाज का स्वरूप बदल जायेगा। हिन्दुस्तान दुनिया को नयी दिशा दे सकेगा।

—डा० दयानिधि पटनायक

पुस्तकें

www.vjnotes.in

भाग्य की विडम्बना

स्टीफन ज्विग के दो प्रसिद्ध उपन्यासों का हिन्दी रूपान्तर।

पृष्ठ-संख्या : १३२, मूल्य : २·७५

विश्वप्रसिद्ध लेखक स्टीफन ज्विग के तीन उपन्यास सस्ता साहित्य मण्डल की ओर से पहले भी प्रकाशित हो चुके हैं। प्रस्तुत पुस्तक उसी प्रयास की चौथी किश्त हैं, जिसमें लेखक के दो लघु उपन्यास संकलित हैं।

हिन्दी साहित्य को अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व की कृतियों से समृद्ध करने का यह प्रयास बिना हिचक स्तुति का पात्र तो है ही, विषयों और ग्रन्थों के चयन में जिस स्तर का निर्वाह आज के बाजारू वातावरण में किया गया है, वह तो निश्चय ही सत्साहित्य के महत्त्व को समझनेवाले हर उद्‌बुद्ध व्यक्ति के सहकार का हकदार भी है।

प्रस्तुत संकलन—भाग्य की विडम्बना और अन्तर्वेदना—में, नारी-जीवन के भावमय आरोह-अवरोह को सूक्ष्मता और संवेदनशीलता के साथ चित्रित करने की जो विलक्षण क्षमता लेखक की है, हिन्दी रूपान्तर करने में रूपान्तरकार आदर्शकुमारीजी ने उसे पूर्ण सुरक्षित रखने की सफल चेष्टा की है।

कुण्ठाग्रस्त तनावपूर्ण सम्बन्धों की घुटन में पल रहे वर्तमान स्त्री-पुरुष-सम्बन्धों को करीब से जानने, परखने और समन्वित जीवन के नये आयाम खोजने में प्रस्तुत संकलन सहायक होगा, ऐसी आशा है।

अन्तरिक्ष (गद्य काव्य)

रचनाकार : ब्रह्मदेव

पृष्ठ-संख्या : ६०, मूल्य : ३·००

विचारवाद और यथार्थवाद की सीमाओं से आज मनुष्य परिचित हो गया है। इस युग के संघर्ष और द्वन्द्व मनुष्य की सीमाओं में घिर जाने की ही निष्पत्तियाँ हैं। इसकी भयंकरता का एहसास अब मानव की अन्तश्चेतना को होने लगा है। वह ढूँढ़ रहा है जीवन का एक तीसरा मार्ग, जो मनुष्य को मनुष्य के साथ असीमता के आँगन तक पहुँचा दे। न तो आज के धर्मों से वह सम्भव हो पा रहा है, और न विज्ञान की चाँद तक पहुँचा देनेवाली क्षमता से!

गद्य काव्य की अन्तरस्पर्शी शैली में रचनाकार ब्रह्मदेव ने शायद इसी प्रेरणा से अन्तरिक्ष की उड़ान लगायी है। 'अपोलो–८' की अन्तरिक्ष यात्रा और एक कवि-हृदय की अन्तरिक्ष यात्रा में अन्तर महान् है; लेकिन आन्तरिक विकलता और अन्वेषी चेतना के स्तर पर दोनों को एक परिप्रेक्ष्य में रखा जा सकता है। सम्भावना दोनों में हो सकती है कि इनसे प्रेरणा पाकर मनुष्य अपनी सीमाओं को तोड़कर अनुभूति के आन्तरिक्ष में जा पहुँचे। रचनाकार इस युग के मन्थन से प्रकट हुए गरल के संहारक प्रभावों से धरती को मुक्त करने के लिए ही विषपायी शिव का स्मरण करते हुए पुस्तक का अन्त करता है :

"ओ शिव, ओ महाकाल, तुमने अपने कण्ठ का वह गरल इन्हें (पृथ्वी-पुत्रों को) क्यों सौंप दिया? ओ मृत्युञ्जय, आज इस भय-विकम्पित धरती के लिए अमृत दो—अपना संजीवनास्त्र दो!"

रचनाकार—जो एक सफल चित्रकार भी है—की तूलिका से प्रकट हुए भावचित्रों को पुस्तक में विषय के साथ जोड़ देने से सौंदर्य में सुगन्ध भी जुड़ गयी है।

जागे तभी सवेरा (उपन्यास)

लेखक : जय भिक्खु

पृष्ठ-संख्या : २५७ मूल्य : ५·००

प्रस्तुत उपन्यास गुजराती के प्रसिद्ध लेखक श्री जय भिक्खु के 'प्रेमनुं मंदिर' का हिन्दी रूपान्तर है।

मत्स्य-न्याय की निस्सारता को दिखाने के लिए लेखक ने इतिहास-प्रसिद्ध पात्र एवं कथानकों का सहारा लिया है। ऐसे कथानक प्राचीन काल के जैन, बौद्ध और ब्राह्मण साहित्य में विद्यमान हैं।

यों ऊपर से यह उपन्यास पौराणिक है, किन्तु इसकी अन्तरधारा में अर्वाचीन युग की भी झलक मिलती है। अवन्ती, चंपा और विदेह के स्थान पर जर्मनी, इंग्लैण्ड एवं रूस रखे जा सकते हैं।

उपन्यास पढ़ते समय ऐसा लगता है, जैसे सर्वत्र मत्स्य-न्याय व्याप्त है, लेकिन बीच-बीच में करुणा के दीपक भी प्रज्वलित होते रहते हैं। पाठक मत्स्य-न्याय की शक्तियों से निराश होने के बदले आशावान बनकर पुरुषार्थी होने की प्रेरणा पाता है।

नयी राह (नाटक)

लेखक : हरिकृष्ण 'प्रेमी'

पृष्ठ-संख्या : १०८, मूल्य : २·५०

प्रेमीजी जो विचार प्रस्तुत करना चाहते हैं उसे वे नाटक की शैली में खूबी के साथ रख सके हैं। 'कालेजों से निकलकर लाखों की संख्या में युवक गाँवों की सेवा में क्यों न निकल पड़ें और वहाँ अपनी जीविका के लिए उत्पादन करते हुए गाँव की सेवा करें।' एक युवक की इस आकांक्षा को अच्छे ढंग से व्यक्त किया गया है। समाज-परिवर्तन में लगे हर कार्यकर्ता को तथा युवकों और युवतियों को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए।

दिव्य जीवन की झाँकियाँ

लेखक : यशपाल जैन

पृष्ठ-संख्या : १२७, मूल्य : १.००

इस पुस्तक के तीन खण्ड किये गये हैं। पहले खण्ड में ४४ उद्‌बोधक प्रसंग हैं। दूसरे खण्ड में १० पावन स्मृतियाँ हैं और तीसरे में २० प्रेरक घटनाएँ हैं। मनुष्य-जीवन से सम्बन्धित एक-एक प्रसंग अत्यन्त रोचक हैं और उनका अप्रत्यक्ष रूप से मन पर असर पड़ेगा ही। नेताओं की कुछ स्मृतियाँ तथा लेखक की अपनी यात्रा की घटनाएँ भी उदारता, नम्रता, और समग्रता की शिक्षा देती हैं।

गांधीजी का जीवन-प्रभात

पृष्ठ-संख्या : ७२, मूल्य : १.००

यह छोटी-सी पुस्तक गांधीजी के बचपन से लेकर अफ्रीका में एक साल के जीवन पर प्रकाश डालती है। इसमें गांधीजी की आत्मकथा से शुरू के प्रसंग संग्रह किये गये हैं। कुछ गांधीजी के रेखाचित्र हैं। पुस्तक विद्यार्थियों के लिए उपयोगी है। —अविबन्धु

उक्त सभी पुस्तकों के प्रकाशक :

सस्ता साहित्य मण्डल,

कनाट सर्कस, नयी दिल्ली–१

स्वस्थ लोकतंत्र और शिष्ट चुनाव के लिए बिहार में मतदाता-शिक्षण अभियान

www.vinoba.in

भारत के चार आम चुनावों ने दलगत राजनीति को ऊँचा उठाने के बदले सम्प्रदायवाद, जातिवाद एवं अन्य संकीर्ण विचारों को बढ़ावा देने के साथ ही किसी भी प्रकार मत खरीदने के कार्यक्रम को बढ़ावा दिया है। मतदाताओं से मत खरीदने के अतिरिक्त विधान-सभा एवं लोकसभा के सदस्यों से भी खरीद-बिक्री का कार्यक्रम तीव्रता से बढ़ रहा है। राजनीतिक अनैतिकता इतनी बढ़ गयी है कि उसके परिणामस्वरूप सन् १९६७ के आम चुनाव के बाद बिहार में राजनीतिक स्थिरता नाम की कोई चीज नहीं रह गयी।

लोकतंत्र के स्वस्थ विकास के लिए समान विचार के व्यक्तियों को मिलाकर राजनीतिक दल बनाया जाता है। राजनीतिक दल चुनाव घोषणा-पत्र द्वारा राज्य के आर्थिक, समाजिक, राजनीतिक एवं अन्य ढाँचे बनाने का आश्वासन आम जनता को देता है।

विकसित लोकतांत्रिक पद्धति में मतदाता अपनी पसन्द के राजनीतिक दल को, घोषित घोषणा-पत्र के कार्यान्वयन की आशा में मत देता है। लेकिन सन् १९६७ के आम चुनाव के परिणाम एवं विधायकों के आचरण ने मतदाताओं को राजनीतिक दल से ऊपर उठकर अच्छे प्रत्याशियों को मत देने के लिए मतदाता को बाध्य किया है।

बिहार में श्री जयप्रकाश नारायण के मार्गदर्शन में आगामी मध्यावधि चुनाव के अवसर पर तीन कार्य करने की योजना है। योजनानुसार मतदाताओं को दल के बंधन से मुक्त होकर अच्छे उम्मीदवार को मत देने के लिए व्यक्तिगत सम्पर्क, बैठक, आमसभा, पर्चा एवं प्रचार के अन्य माध्यमों से सलाह देने का कार्यक्रम है।

पटना नगर में पटना के प्रमुख नागरिकों की बैठक में मतदाता-सलाह समिति का गठन किया गया है तथा राज्य के सभी जिला सर्वोदय मंडलों से निवेदन किया गया है कि वे अपने जिले के प्रमुख नागरिकों की बैठक में जिला सलाहकार समिति का गठन कर लें।

राज्य के ७ जिलादानी जिले-सारण, चंपारण, मुजफ्फरपुर, दरभंगा, सहरसा, पूर्णिया एवं गया में चुनाव-दिन ९ फरवरी '६९ तक सघन मतदाता-शिक्षण का कार्यक्रम बनाया गया है।

इसके लिए आचार्य राममूर्ति एवं बिहार ग्रामदान-प्राप्ति समिति के रामानन्दन सिंह के दौरे का व्यापक कार्यक्रम बनाया गया है। सारण, चम्पारण, मुजफ्फरपुर, सहरसा एवं पूर्णिया जिले के दौरे के अवसर पर आचार्य राममूर्ति एवं रामनन्दन सिंह ने मतदाताओं की सभा में अच्छे उम्मीदवार को मत देने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। श्री राममूर्ति ने मतदाताओं को बताया कि इस, मध्यावधि चुनाव में तो अच्छे उम्मीदवार को मत देने की सलाह है, लेकिन सन् १९७२ के चुनाव में मतदाताओं को अपने उम्मीदवार खड़े करने हैं।

अपना उम्मीदवार का अर्थ सर्वोदय-कार्यकर्ता नहीं होगा। सर्वोदय-कार्यकर्ता को तो स्वयं किसी भी हालत में खड़ा नहीं होना है।

पिछले चुनाव के अनुभव से स्पष्ट है कि चुनाव के अवसर पर प्रत्याशी एवं उनके दल के नेता एक-दूसरे के विरोध में तीखा प्रहार करते हैं, जिसके कारण हिंसात्मक मनोभावना को तो उत्तेजना मिलती ही है, साम्प्रदायिकता, जातीयता, प्रान्तीयता, एवं अन्य राष्ट्रविरोधी भावनाओं को भी बल मिलता है। तनाव, ईर्ष्या, द्वेष आदि के बढ़ाव के कारण हिंसात्मक विस्फोट की संभावना बढ़ती है, साथ ही अलग-अलग सभा करने से खर्च भी अलग-अलग होते हैं। सर्वोदय-आन्दोलन की ओर से एक ही मंच से दल के प्रत्याशियों एवं उनके नेताओं को बारी-बारी से अपने विचार व्यक्त करने के लिए निवेदन करने की योजना है।

५ जनवरी १९६९ को मुजफ्फरपुर नगर-भवन के प्रांगण में जिला सर्वोदय-मंडल मुजफ्फरपुर के तत्त्वावधान में एक आम सभा का आयोजन किया गया, जिसमें नगर-क्षेत्र के उम्मीदवारों—कांग्रेस दल के श्री प्रह्लाद प्रसाद मलहोत्रा, संसोपा के श्री मोहनलाल गुप्त, जनसंघ के प्रो० श्री अखौरी राजेन्द्रप्रसाद, भारतीय क्रान्ति दल के श्री बैद्यनाथ प्रसाद वर्मा एवं रामराज्य परिषद के श्री जगन्नाथ प्रसाद—ने अपने विचार व्यक्त किये। प्रयास करने के बाद भी साम्यवादी दल के उम्मीदवार श्री रामदेव शर्मा उपस्थित न हो सके।

चुनाव-अभियान में एक ही मंच से विभिन्न प्रत्याशियों के बारी-बारी से भाषण कराने का यह आयोजन एक नया प्रयोग था इस कारण सभा में अपार जनसमूह उमड़ पड़ा था।

इसी प्रकार एक ही मंच से विभिन्न प्रत्याशियों के भाषणों का आयोजन जिला एवं क्षेत्र-स्तर पर भी करने की योजना है।

बिहार के विभिन्न राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों की एक बैठक २३ दिसम्बर को श्री जयप्रकाश नारायण की अध्यक्षता में आयोजित की गयी थी। बैठक ने आम राय से आगामी मध्यावधि चुनाव के अवसर पर सप्तसूत्री कार्यक्रम को कार्यान्वित करने का निर्णय किया है। इन निर्णयों को तोड़नेवाले दल एवं उनके प्रत्याशियों की जाँच करने के लिए एक निगरानी समिति का गठन करने की भी योजना है।

सर्वोदय-आन्दोलन का तीसरा कार्य चुनाव के अवसर पर तनाव रोकने, डंडे का भय एवं पैसे के लोभ द्वारा मत प्राप्त करने के प्रयास को रोकने का है।

सर्वोदय-कार्यकर्ताओं की शक्ति सीमित है, अवधि अल्प एवं कार्य व्यापक है। फिर भी यथाशक्ति प्रयास हो रहा है।

—विशेष प्रतिनिधि

मतदाता-शिक्षण के लिए पोस्टर मँगाइये !

सर्व सेवा संघ की चुनाव-सम्बन्धी मतदाता शिक्षण योजना के अन्तर्गत रंगीन पोस्टर और फोल्डर तैयार हैं। जिन क्षेत्रों में मध्यावधि चुनाव के इस मौके पर मतदाता-शिक्षण अभियान चलाये जा रहे हैं, उन क्षेत्रों के साथी : संचालक, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी–१ : के नाम पत्र लिखकर शीघ्रातिशीघ्र मँगा लें।

मुंगेर में मतदाता-शिक्षण अभियान

www.vinoba.in

गत १२ जनवरी ६९ को भाई गोखले की अध्यक्षता में मुंगेर के प्रबुद्ध नागरिकों की बैठक मध्यावधि चुनाव में मतदाता-प्रशिक्षण के सम्बन्ध में हुई। आचार्य राममूर्ति भाई ने अपने भाषण में कहा कि राजनीति का जमाना लद चुका। इसे स्पष्ट करने के लिए मुंगेर में तर्क से अधिक बलवान सबूत यह है कि जिले के स्वतंत्रता-संग्राम के दो सेनानी श्री गिरिधर नारायण सिंह एवं कामरेड ब्रह्मदेव ने अपने विचार को रखते हुए स्पष्ट कहा कि अब राजनीति का जमाना नहीं रहा। मुंगेर जिले में कम लोगों को इनके समान राजनीति का दर्शन, ज्ञान एवं गहरा अनुभव होगा।

बैठक ने सर्वसम्मति से जिला मतदाता-प्रशिक्षण समिति का गठन किया एवं निश्चय किया कि जिले के प्रत्येक निर्वाचन-क्षेत्र में एक ही मंच से क्षेत्र के सभी उम्मीदवारों के भाषण कराये जायँ, एवं प्रमुख स्थानों में घूम-घूमकर अपने विचार का प्रचार किया जाय। सभा का संयोजन श्री रामनारायण सिंह, संयोजक जिला सर्वोदय मण्डल ने किया था।

चाकसू में राजस्थान ग्रामदान-अभियान प्रारम्भ

चाकसू : जनवरी '६९। चाकसू तहसील में गत ७ जनवरी से प्रखण्डदान का अभियान प्रारम्भ हो गया है। अभियान में २० कार्यकर्ता भाग ले रहे हैं। अभियान के प्रथम चरण में ग्रामदान के विचार का प्रचार तथा शिक्षकों, छात्रों, समाजसेवियों, नागरिकों, पंच-सरपंचों तथा पटवारियों से व तहसील के समाज-सेवी संगठनों से सम्पर्क किया जा रहा है। अभियान में २० कार्यकर्ता भाग ले रहे हैं।

भूदान तहरीक

उर्दू भाषा में अहिंसक क्रांति की संदेशवाहक पाक्षिक पत्रिका

वार्षिक शुल्क : ४ रुपये

सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी–१

सन् १९६९ गांधी जन्म-शताब्दी वर्ष है !

गांधीजी ने कहा था :

"मेरा सर्वोच्च सम्मान जो मेरे मित्र कर सकते हैं, वह यही है कि मेरा वह कार्यक्रम वे अपने जीवन में उतारें, जिसके लिए मैं सदैव जिया हूँ या फिर यदि उन्हें उसमें विश्वास नहीं है तो मुझे उससे विमुख होने के लिए विवश करें।"

मानव-समाज के सामने, आज के संघर्षपूर्ण एवं हिंसामय वातावरण से मुक्ति पाने के लिए, गांधी-मार्ग ही आशा का एकमात्र मार्ग रह गया है।

गांधीजी की दृष्टि में :

(१) दुनिया के सब धर्म एक जगह पहुँचने के अलग-अलग रास्ते हैं।
(२) जाति और प्रान्त की दोहरी दीवार टूटनी चाहिए।
(३) अछूत प्रथा हिन्दू समाज का सबसे बड़ा कलंक है।
(४) यदि किसी व्यक्ति के पास, जितना उसे मिलना चाहिए उससे अधिक हो तो वह उसका संरक्षक या ट्रस्टी है।
(५) किसान का जीवन ही सच्चा जीवन है।
(६) स्वराज्य का अर्थ है अपने को काबू में रखना जानना।
(७) प्रत्येक को सन्तुलित भोजन, रहने का मकान और दवा-दारू की काफी मदद मिल जानी चाहिए, यह है आर्थिक समानता का चित्र।

पूज्य बापू की जीवन-दृष्टि में अपनी दृष्टि विलीन कर गांधी-जन्म-शताब्दी सफलतापूर्वक मनाइए।

राष्ट्रीय-गांधी-जन्म शताब्दी-समिति की गांधी रचनात्मक कार्यक्रम उपसमिति, दुंकलिया भवन, कुन्दीगरों का भैरू, जयपुर–३ (राजस्थान) द्वारा प्रसारित।

www.vinoba.in

प्रादेशिक पत्र

उत्तर प्रदेश की चिट्ठी

उत्तर प्रदेश में ग्रामदान-आन्दोलन की गति प्रान्तदान के संकल्प के बाद से अब तीव्र होने लगी है। कई जिलों में जहाँ बलिया-समारोह के पूर्व कुछ भी कार्य नहीं प्रारम्भ हुआ था, वहाँ अब गांधी-जन्म-शताब्दी समिति की गोष्ठियों के माध्यम से रचनात्मक संस्थाओं के कार्यकर्ताओं के शिविरों द्वारा कार्य आरम्भ हुआ है और इसमें सफलता भी मिल रही है। फैजाबाद, बस्ती, गोरखपुर, देवरिया, गाजीपुर, हरदोई, कानपुर में आन्दोलन प्रारम्भ हुए और काफी प्रगति वहाँ की हुई और यह आशा बँध रही है कि गाँव में विचार समझाने पर विचार ग्रहण करने की उत्सुकता है, केवल कार्यकर्ताओं के पहुँचने की आवश्यकता है। अभी मुरादाबाद जिले में भी, जहाँ काफी मुश्किल दीखता था, शिविर और अभियान चलाये जाने पर १४३ ग्रामदान प्राप्त हुए हैं।

कार्यकर्ता रचनात्मक संस्थाओं (मुख्यतः गांधी आश्रम) से, गांधी निधि, सर्वोदय मण्डल तथा कुछ दलों के भी, जो दल में सक्रिय नहीं हैं, शिविरों में आते हैं और पाँच दिन तथा इससे अधिक दिनों तक भी आवश्यकता पड़ने पर समय देते हैं। इनके अलावा प्रदेश के पश्चिमी जिलों में जूनियर हाईस्कूल, माध्यमिक विद्यालयों तथा प्राइमरी के शिक्षकों में से अच्छी संख्या मिलने लगी है। कहीं-कहीं तो यह संख्या १५० तक पहुँच जाती है। इनके सहयोग से पश्चिमी जिलों के अभियान एक प्रखण्ड से अधिक दो प्रखण्डों में और पूरी तहसील में अभियान चलाये जा सकते हैं। पूर्वी जिलों में शिक्षकों का सहयोग अभी शिविरों तक ही अधिकांश रूप में मिलता है। कुछ शिक्षक सबेरे-शाम अपने-अपने क्षेत्रों में गाँवों में पहुँचकर सहयोग दे देते हैं। जिन जिलों में कांग्रेस या कांग्रेस समर्थित जिला परिषद् के अध्यक्ष हैं, वहाँ सहयोग अधिक मिलता है, अन्य जगहों में कम।

शिविर और अभियान के खर्च के लिए पूर्वतैयारी के समय ही जिस क्षेत्र में अभियान चलाना होता है, वहाँ के सभ्रान्त नागरिकों, विद्यार्थियों और शिक्षकों से भी रसद और नकद रुपयों के रूप में संग्रह हो जाता है। एक प्रकार से शिविर और अभियान का करीब-करीब पूरा खर्च पश्चिमी जिलों में प्राप्त होने लगा है, पर कार्यकर्ताओं का वेतन यातायात-खर्च व अन्य खर्च, स्टेशनरी आदि के लिए श्री गांधी आश्रम और कहीं-कहीं कुछ छोटी-छोटी संस्थाएँ ही मिलकर बरदाश्त करती हैं। पूर्वी जिलों में भी शिविर के लिए कुछ जगहों में अन्न-संग्रह मिला है, पर अभियान-खर्च पूरा-का-पूरा संस्था को ही बर्दाश्त करना पड़ा। वाराणसी जिलादान के अभियान में प्रायः पूरा खर्च वाराणसी जिले की सभी खादी-संस्थाओं ने मिलजुलकर व्यय किया है और कर रही हैं। उत्तराखण्ड में शिविर एक दिन के ही होते हैं। कार्यकर्ता-संख्या कम है, गाँव के लोग ही खर्च बर्दाश्त करते हैं। कुछ थोड़ी सहायता गांधी-निधि ने की है, बाकी खर्च स्थानीय ग्रामस्वराज्य संघ ने उठाया है।

प्रदेशीय स्तर पर कोई अर्थसंग्रह-समिति नहीं बनी है। प्रदेशीय ग्रामदान-प्राप्ति समिति ने हर जिले को अपनी-अपनी प्राप्ति-समिति को ही धन-संग्रह की योजना बताने और धन-संग्रह करने की सलाह दी है और उस दिशा में सभी सक्रिय हुए।

अभियानों में अभी ग्रामसेवक व सरकारी कर्मचारियों का कुछ ही जगहों में सहयोग मिला है। सभी जगह सक्रिय नहीं हो पाये

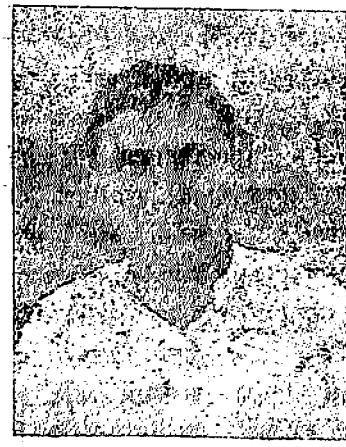

श्रद्धांजलि

भाई कर्मवीर का पार्थिव शरीर अब नहीं रहा! अग्रज भाई धर्मवीर ने तीन माह तक लगातार, उनकी मृत्यु से घनघोर संघर्ष किया। ऐलोपैथिक, यूनानी, आयुर्वेदिक तथा निसर्गोपचार; सब चला, पर मौत की दवा कहाँ है? क्षीण होते-होते १० जनवरी की साढ़े पाँच बजे संध्या समय उन्होंने अन्तिम साँस ली! प्रभु की लीला! इनके पिताजी तथा चार और भाई, सबने शुक्रवार को ही शरीर-त्याग किया। ३४-३५ वर्ष की भरी जवानी में अपनी पत्नी और क्रमशः पाँच और तीन वर्ष के सोनू और मण्टू को समाज के ऊपर छोड़कर गये! अग्रज धर्मवीर अब अकेला हो गया। श्वशुर आचार्य राममूर्ति ने पहली बार अपने स्वजन की मृत्यु देखी। परमात्मा इनकी वृद्धा माता को यह असह्य शोक सहन करने की शक्ति दे!

न जाने बिहार को क्या बदा है! धनबाद जिलादान के पहले तायलजी चले गये! बिहारदान के निर्माण की पतवार सम्भालनेवाले राजकिशोर बाबू गये, और अब चला गया मुक्त चिंतक एवं भावनाशील यह युवक भी! कर्मवीर की मृत्यु से हमने एक उदीयमान युवक मित्र खोया। कोमल कंठ, प्रांजल भाषा, और स्वतंत्र विचार। विनोबाजी सही कहते हैं—हमारे यहाँ गुणों का 'पोस्टमार्टम' होता है। सर्वोदय आन्दोलन उनकी शक्ति का पूरा उपयोग नहीं कर सका। कर्मवीरजी का भावुक एवं मुक्त मन स्वतंत्र मार्ग ढूँढ़ता रहा। कितनी लगन एवं कितना बड़ा हौसला! ११ सितम्बर '६६ को संकल्प लिया, पलामू का ग्यारह प्रखण्डदान तीन माह में होगा। न अपना क्षेत्र, न कार्यकर्ताओं की शक्ति, न पास में पैसा, बस एकमात्र आत्मशक्ति का सम्बल।

पटना के बाँसघाट पर १० जनवरी की रात्रि में ९ बजे रचनात्मक जगत् के सैकड़ों कार्यकर्ताओं ने मिलकर उनका अन्तिम संस्कार किया।

'ॐ क्रतो स्मर कृतं स्मर।
क्रतो स्मर कृतं स्मर॥'

—निर्मलचन्द्र

www.vinoba.in

हैं। प्रधान और प्रखण्ड-प्रमुख और उपप्रखण्ड-प्रमुखों का सहयोग सर्वत्र सराहनीय रहा है। वैचारिक दृष्टि से शिक्षण-संस्थाओं के प्रधानाध्यापकों का समर्थन उनकी गोष्ठियाँ करने के कारण मिला है। प्रदेश में कार्य के प्रचार-प्रकाशन के लिए कोई प्रबन्ध अभी तक नहीं हो सका। ग्रामदान के सम्बन्ध में सर्व सेवा संघ के वरिष्ठ लोगों के लेख एक कालम में भिन्न-भिन्न दैनिक पत्रों में जल्दी-जल्दी प्रकाशित हों, तो तूफान का वातावरण निश्चित रूप से बन सकता है।

प्रयत्न किया जा रहा है कि ग्रामदानी गाँवों के नागरिक भी ग्रामदान-प्राप्ति के लिए अन्य गाँवों में टोलियों के साथ पहुँचे। अभी मिर्जापुर में ही यह तरीका सम्भव हो पाया है। यदि वह तरीका चल पड़ा तो जिन जिलों में अभी तक अभियान प्रारम्भ नहीं हो पाया है, वहाँ भी प्रारम्भ हो जायेगा और जोर पकड़ लेगा।

३१ दिसम्बर तक १२,००० से अधिक ग्रामदान, ७८ प्रखण्डदान, २ जिलादान हो चुके हैं। और २ जिले—वाराणसी और चमोली जिलादान के करीब हैं। वाराणसी का काम एक सप्ताह के अन्दर पूरा हो जायेगा, अभियान जारी है। चमोली का भी करीब-करीब पूरा हो गया है, पर भीषण हिमपात, ठण्ड और यातायात के अवरोध से अभियान स्थगित हुआ है, वरना ३१ दिसम्बर तक वह भी पूरा हो गया होता। आजमगढ़ पूर्वी जिलों में, और मैनपुरी, आगरा, पश्चिमी जिलों में जिलादान की ओर तीव्रता से बढ़ रहे हैं।

अभी जनवरी में पश्चिमी जिलों में एटा, मैनपुरी, सहारनपुर, मेरठ, मुजफ्फरनगर, मथुरा, बुलन्दशहर जिलों में अभियान चल रहे हैं। पूर्वी जिलों में केवल गाजीपुर में अभियान चल रहा है और सम्भवतः एक अभियान आजमगढ़ में चलाना सम्भव होगा। शेष जिलों के अभियान १५ फरवरी के बाद से तीव्रता से प्रारम्भ किये जायेंगे, और जुलाई-अगस्त तक तेजी से चलेंगे। —कपिलभाई

महाराष्ट्र की चिट्ठी

सर्व सेवा संघ की बैठक २६-२७-२८ फरवरी '६९ को सांगली में हो रही है। उसके लिए सर्वश्री जयप्रकाशजी, मनमोहन चौधरी, नारायण देसाई, आचार्य राममूर्ति, सिद्धराज ढड्ढा आदि प्रमुख नेता आयेंगे। बैठक के बाद ये सब इर्दगिर्द के क्षेत्रों में प्रचार-दौरा करेंगे। श्री जयप्रकाशजी कोल्हापुर और सोलापुर जिले में दौरा करेंगे।

श्री जयप्रकाश नारायण सांगली आयेंगे, उस समय उनका स्वागत एक लाख रु० की थैली समर्पण करते हुए किया जायेगा। सांगली जिले में उनके विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये गये हैं। कुछ ग्रामदान भी अर्पित किये जायेंगे। उसके लिए सरपंच, ग्रामसेवक आदि लोगों के एक-एक दिन के शिविर जनवरी में हो रहे हैं। बाद में ग्रामदान-प्राप्ति के लिए पदयात्राएँ होंगी। सर्वोदय-मंडल के प्रमुख कार्यकर्तागण सर्वश्री गोविंदराव शिंदे, जयवंत मठकर, वर्धा के श्री बाबूराव सोवनी आदि से मार्गदर्शन मिल रहा है।

पदयात्राएँ : जावली तहसील के २५ गाँवों के सरपंच, सदस्य, पटवारी, पुलिस-पाटील, सर्किल इन्स्पेक्टर आदि लगभग १५० व्यक्तियों का ग्रामस्वराज्य-शिविर २६ दिसम्बर को हुआ। पंचायत समिति के उपसभापति श्री कदम ने भूचाल-पीड़ित जनता के पुनर्वसन का जो काम सर्वोदय-मंडल ने इस क्षेत्र में किया, उसकी सराहना करते हुए लोगों को गांधी-जन्म-शताब्दी की अवधि में ग्रामदान द्वारा स्वराज्य की स्थापना करने के लिए प्रेरित किया।

मराठवाड़ा क्षेत्र के नांदेड, परभणी और औरंगाबाद जिले में गत अक्तूबर से दिसम्बर माह तक पदयात्राएँ हुईं। कुछ ग्रामदान भी मिले। अब बीड जिले में सर्वश्री मोतीलालजी मंत्री, गंगाप्रसाद अग्रवाल, अच्युतभाई देशपांडे आदि प्रमुख कार्यकर्ताओं के मार्गदर्शन में १२ से १९ जनवरी तक ग्रामदान-पदयात्राएँ हो रही हैं।

जलगाँव जिले में २५ ग्रामदान प्राप्त : जलगाँव जिले की चोपड़ा तहसील के अड़ावद विकास-खंड में २६ से ३० दिसम्बर तक हुई ग्रामदान-पदयात्रा द्वारा १६ टोलियों ने ८५ गाँवों में विचार-प्रचार किया। उनमें से २५ गाँवों ने ग्रामदान-संकल्प किया। १२३ रु० की साहित्य-बिक्री हुई। "साम्ययोग" मराठी साप्ताहिक पत्र के ५१ ग्राहक बने।

अकोला जिलादान का संकल्प : १३-१४ दिसम्बर को हुए जिला सर्वोदय-सम्मेलन में गांधी जन्म-शताब्दी-काल में अकोला का जिलादान कराने का संकल्प किया गया। उस दृष्टि से १५ से १८ दिसम्बर तक श्री बंग का दौरा जिले भर में हुआ। जनवरी के आखिरी सप्ताह में पातुर और बार्शी-टाकली विकास-खण्ड में पदयात्राएँ होंगी।

अकोला जिले में कानूनन ग्रामदान : अकोला जिले में तुलजापुर गाँव महाराष्ट्र में प्रथम ग्रामदानी गाँव है, जो कानूनन ग्रामदान घोषित किया गया।

महाराष्ट्र रचनात्मक कार्यकर्ता-शिविर : महाराष्ट्र की विभिन्न रचनात्मक संस्थाओं के कार्यकर्ताओं की संख्या लगभग एक हजार होगी। सेवाग्राम में २६ से ३० दिसम्बर तक उन सबका एक शिविर आचार्य दादा धर्माधिकारी और श्री शंकरराव देव के मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआ।

शिविर में महाराष्ट्र की कई प्रमुख संस्थाओं के अनुभवी कार्यकर्ताओं की एक 'ग्राम-स्वराज्य समिति' बनायी गयी। सर्वसम्मति से निर्णय हुआ कि गांधी-जन्म-शताब्दी काल में महाराष्ट्रदान के कार्य में शक्ति केन्द्रित की जाय, उसके अनुसार योजना बनी है।

रत्नागिरी जिले में ५६ ग्रामदान : इस जिले की मण्डलगढ तहसील में हुई पदयात्रा में ५६ ग्रामदान प्राप्त हुए। सर्वश्री विजय नारकर, शिवराम जाधव, हरिश्चन्द्र नाईक, शाहिर चव्हाण, राम गड़ेकर आदि कार्यकर्ताओं ने पदयात्रा में भाग लिया।

—'सर्वोदय प्रेस सर्विस', गोपुरी, वर्धा

वार्षिक शुल्क : १० रु०; विदेश में २० रु०; या २५ शिलिंग या ३ डालर। एक प्रति : २० पैसे।
श्रीकृष्णदत्त भट्ट द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं इण्डियन प्रेस (प्रा०) लि० वाराणसी में मुद्रित।